हरिभूमि

झज्जर-बहादुरगढ़ भूमि

रोहतक, रविवार 19 जुलाई 2026

9 4200 वोटर्स ने जमा नहीं कराए गणना प्रपत्र

10 शास्त्री नगर में सीवर ठप, सड़क भी क्षतिग्रस्त

खबर संक्षेप

पानी चोरी रोकने को गश्त कर रहे बेलदारों के साथ मारपीट

झज्जर। क्षेत्र की खाचरौली माइनर पर पानी चोरी रोकने वाले बेलदारों के साथ मारपीट की गई है। पुलिस को दी शिकायत में रवि ने बताया कि वह खाचरौली माइनर मातनहेल में बेलदार के पद पर कार्यरत है। बीती 16 जुलाई की रात करीब साढ़े दस बजे जब वह अपने साथ प्रदीप, अशोक, अनिल, रजत तथा जेई सचिन व रामप्रकाश के साथ गश्त करते हुए पानी चोरी हटवा रहे थे। वहां चार जमींदारों द्वारा उन पर हमला किया गया। इस दौरान जब बेलदार प्रदीप अपनी जान बचाने के लिए आगे चल रही सरकारी गाड़ी की ओर भाग गया। वहीं उन्होंने उसके साथ मारपीट की तथा गर्दन दबाकर उसे जान से मारने का प्रयास किया। रवि के अनुसार वह बेहोश कर मौके पर ही गिर गया। शिकायत के आधार पर मामला दर्ज करते हुए पुलिस द्वारा मामले की जांच की जा रही है।

आईटीआई गुढ़ा में पहली काउंसलिंग शुरू

झज्जर। राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान झज्जर एट गुढ़ा में पहली काउंसलिंग शुरू हो गई है। प्राचार्य एवं जिला नोडल अधिकारी जीतपाल ने बताया कि राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान झज्जर एट गुढ़ा में 15 ट्रेड में कुल 444 सीटों पर दाखिले किए जाने हैं। उन्होंने बताया कि मेरिट लिस्ट में नाम आने वाले विद्यार्थी आईटीआई कैंपस में 21 जुलाई तक आकर दाखिला ले सकते है और 22 जुलाई तक फीस जमा करवा सकते हैं। इस दाखिला प्रक्रिया के दौरान संस्थान शनिवार तथा रविवार छुट्टी वाले दिनों में भी खुला रहेगा।

सेक्टर-12 में विशाल पौधरोपण अभियान आज

बहादुरगढ़। क्लीन एंड ग्रीन ट्रस्ट सहित अन्य सामाजिक संस्थाओं की ओर से रविवार 19 जुलाई को शहर के सेक्टर-12 में एक बार फिर पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम में डीसीपी मयंक मिश्रा और नगर परिषद की चेयरपर्सन सरोज राठी बतौर मुख्य अतिथि आमंत्रित किए गए हैं। दरअसल, क्लीन एंड ग्रीन ट्रस्ट की ओर से बीते कई वर्षों से इलाके की हरियाली पर जोर दिया जा रहा है। बीते रविवार को ट्रस्ट ने विभिन्न संस्थाओं और पर्यावरण प्रेमियों के साथ मिलकर यहां सेक्टर-12 में बाइपास किनारे मियावाकी तकनीक से मिनी जंगल की शुरुआत की। उस दौरान करीब 2 हजार पौधे लगाए गए। अब उसी क्रम में आगे बढ़ते हुए साथ लगती जमीन पर जंगल को और विस्तार दिया जा रहा है। रविवार 19 जुलाई को यहां बड़े स्तर पर पौधरोपण होगा। पर्यावरण प्रेमियों का कहना है कि इस तरह के अभियान न केवल पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अहम साबित होते हैं बल्कि नई पीढ़ियों में भी प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी का भाव उत्पन्न होता है।

रोहद में छत से गिरकर युवक की मौत

बहादुरगढ़। गांव रोहद में छत से गिरकर एक प्रवासी युवक की मौत हो गई। पुलिस ने मामले में जांच शुरू कर दी है। मृतक की पहचान करीब 30 वर्षीय विनोद के रूप में हुई है। मूल रूप से बिहार के मुज्जफरपुर का रहने वाला था। पिछले कुछ समय से यहां रोहद में रह रहा था और वहीं पर स्थित एक फैक्ट्री में काम करता था। जानकारी के मुताबिक, शुक्रवार की रात को वह खाना खाकर अपनी छत पर गया था। रात करीब 12 बजे संदिग्ध परिस्थितियों में छत से गिर गया। जब तक उस पर किसी की नजर पड़ती, देर हो चुकी थी। अस्पताल में चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। सूचना पाकर आसौदा थाने से पुलिस मौके पर पहुंची और आवश्यक कार्रवाई शुरू की। पांव फिसलकर गिरने की आशंका जताई जा रही है।

सफाई व्यवस्था पर सवाल : सीएमओ को भेजी शिकायत

भाजपा ने छेड़ा सफाई अभियान धरातल पर गंदगी की भरमार

बहादुरगढ़ नप में 2025-26 में 30 करोड़ रुपये घर-घर से कूड़ा उठाने पर खर्च हुए, शहर गंदगी से परेशान

बहादुरगढ़। सब्जी मंडी परिसर में फैली गंदगी।

बहादुरगढ़। नाले में गंदगी दिखाते पूर्व पार्षद जसबीर सैनी।

बहादुरगढ़। स्टेडियम की स्टेज को साफ करती चेयरपर्सन व अन्य।

करोड़ों के व्यापार के बाद भी कूड़े से सड़ रही मंडी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

झज्जर रोड स्थित शहर की सब्जी मंडी में रोजाना करोड़ों का व्यापार होता है। हजारों लोग खरीदारी के लिए आते हैं, लेकिन यहां स्वच्छता जैसी सुविधा का भी घोर अभाव है। इस समस्या को देखते हुए अधिवक्ता नवीन सिंगल ने एक्स (ट्वीटर) पर सीएमओ हरियाणा व मंत्री श्याम सिंह राणा को टैग कर समाधान की मांग उठाई है।

एडवोकेट नवीन का कहना है कि मंडी में बड़ी संख्या में किसान अपनी फसल बेचने आते हैं। खाद्य पदार्थ की खरीद फरोख्त होने के चलते कायदे से यहां स्वच्छता होनी चाहिए लेकिन तस्वीर बिलकुल विपरीत है। मंडी के मुख्य गेट से लेकर अंदर परिसर तक गंदगी का अंबार लगा रहता है। गली सड़ी सब्जियां खुले में फेंकी जा रही हैं। पॉलीथिन कचरे की भरमार है। अतिक्रमण भी हावी रहता है। बेसहारा पशु हर वक्त मंडराते रहते हैं। बरसात होने पर यहां जलभराव और सड़ रही गंदगी आम जन का दम घोंट देती है। हरियाणा स्टेट एग्रीकल्चरल मार्केटिंग बोर्ड के साथ ही अधिकारी इस तरफ ध्यान दें।

भाजपा नेता ने ही सफाई में लगाए भ्रष्टाचार के आरोप

बहादुरगढ़। पूर्व पार्षद एवं भाजपा नेता जसबीर सैनी ने शहर की सफाई व्यवस्था को लेकर गंभीर आरोप लगाए हैं। उनके अनुसार पिछले 4 सालों में शहर की सफाई के नाम पर केवल सरकारी खजाने की सफाई हुई है, धरातल पर सफाई व्यवस्था पूरी तरह से ध्वस्त रही है। हालांकि जसबीर स्वयं भाजपा से जुड़े हैं और भाजपा की सरोज राठी के नेतृत्व में 4 सालों से नगर परिषद में भाजपा का वर्चस्व है। भाजपा नेता जसबीर सैनी ने बिना नाम लिए कटाक्ष करते हुए कहा कि सफाई के नाम पर लूट मचाने वाले आज ईमानदारी का मुखौटा पहनकर घूम रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि चार साल में सफाई कर्मचारियों की संख्या, गाड़ियों और उपकरणों के नाम पर करोड़ों का बजट खर्च किया गया, लेकिन शहर की गलियों, बाजारों और कॉलोनियों में आज भी जगह-जगह कूड़े के पहाड़ लगे हुए हैं। नालियां जाम हैं और बीमारियां बढ़ रही हैं। सैनी ने कहा कि यह बहुत बड़ा घोटाला है और इसकी निष्पक्ष विजिलेंस जांच होनी चाहिए।

इधर, भाजपाइयों ने स्टेडियम में की सफाई

बहादुरगढ़ (हरिभूमि न्यूज)। नगर परिषद चेयरपर्सन सरोज राठी के नेतृत्व में शनिवार को शहर के ब्रिगेडियर होशियार सिंह स्टेडियम में स्वच्छता से स्वागत अभियान के तहत सफाई की गई। भाजपा नेता दिनेश कौशिक ने कहा कि भाजपा का प्रत्येक कार्यकर्ता इस जनअभियान में बढ़-चढ़कर भाग ले रहा है। दिनेश शेखावत, राजेश तंवर, मंडल अध्यक्ष पंकज गर्ग, प्रदीप गुप्ता, प्रवीण कुमार, शमशेर, जगबीर, सफाई निरीक्षक सुनील हुड्डा आदि ने स्टेडियम परिसर की सफाई कर स्वच्छता का संदेश दिया। साथ ही नागरिकों से अपने घरों के साथ-साथ बाजारों, पार्कों, सड़कों और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर भी स्वच्छता बनाए रखने का आह्वान किया गया। उन्होंने कहा कि स्वच्छता सभी की नैतिक जिम्मेदारी है।

गांव खखाना में तेज रफ्तार का कहर

सैर को जा रही महिला की स्कॉर्पियो की टक्कर से मौत

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

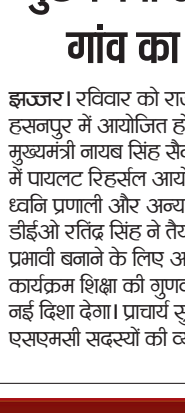

मृतक कृष्णा देवी।

क्षेत्र के गांव खखाना में सैर को जा रही एक महिला को तेज रफ्तार स्कॉर्पियो ने टक्कर मार दी। इस दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल महिला की मौत हो गई। मृतका की पहचान करीब 66 वर्षीया कृष्णा देवी पत्नी लक्ष्मण के तौर पर हुई है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार कृष्णा देवी शुक्रवार की शाम घर से निकलकर सड़क पर सैर को जा रही थी। इसी दौरान उसे एक काले रंग की स्कॉर्पियो गाड़ी ने टक्कर मार दी। टक्कर लगने से गंभीर रूप से घायल कृष्णा देवी को उपचार के लिए शहर के एक निजी अस्पताल में दाखिल कराया गया। यहां उपचार के दौरान कृष्णा देवी की मौत हो गई। मामले के जांच अधिकारी सुनील कुमार ने बताया कि इस संबंध में मृतका के पुत्र कर्मबीर की शिकायत पर आरोपी गाड़ी चालक के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। पुलिस को दी शिकायत में परिजनों द्वारा गाड़ी के नंबरों से भी अवगत कराया गया है।

सड़क पार करते क्लीनर को गाड़ी ने कुचला

झज्जर। ढुलीना चौकी क्षेत्र में एक पेट्रोल पंप के नजदीक सड़क पार करते समय अज्ञात वाहन की टक्कर से घायल हुए क्लीनर की उपचार के दौरान रोहतक पीजीआई में मौत हो गई। पुलिस को दी शिकायत में रोहतक के भिवानी चुंगी निवासी उपेंद्र मलिक ने बताया कि सोनीपत जिले के रभड़ा गांव निवासी उसका भाई शमशेर ट्रक पर क्लीनर का काम करता था। बीती पन्द्रह जुलाई को जब उनका ट्रक एक पेट्रोल पंप पर रुका था तो पैदल सड़क पार करते समय उसे किसी अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी। इस टक्कर में गंभीर रूप से घायल शमशेर को उपचार के लिए रोहतक के पीजीआई ले जाया गया, जहां उसकी मौत हो गई।

मुख्यमंत्री से आज सीधे जुड़ेगा हसनपुर गांव का मॉडल संस्कृति विद्यालय

झज्जर। रविवार को राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय हसनपुर में आयोजित होने वाले एसएमसी मुख्यमंत्री संवाद कार्यक्रम में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी सीधे जुड़ेंगे। कार्यक्रम से पहले शनिवार को विद्यालय में पायलट रिहर्सल आयोजित की गई। जिसमें ऑनलाइन कनेक्टिविटी, कैमरा, ध्वनि प्रणाली और अन्य तकनीकी व्यवस्थाओं का सफल परीक्षण किया गया। डीईओ रतिंद्र सिंह ने तैयारियों का जायजा लेते हुए कार्यक्रम को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक सुझाव दिए। उन्होंने बताया कि यह संवाद कार्यक्रम शिक्षा की गुणवत्ता, विद्यालय विकास और सामुदायिक सहभागिता को नई दिशा देगा। प्राचार्य सुनील दत्त ने बताया कि मुख्यमंत्री संवाद कार्यक्रम में एसएमसी सदस्यों की व्यापक भागीदारी रहेगी।

सैनीपुरा मार्ग खुला रखने को सीएम से मिलेंगे विधायक

बहादुरगढ़। मौके पर स्थानीय लोगों से चर्चा करते विधायक राजेश जून।

■ हजारों लोगों के आवागमन के लिए जरूरी है यह रास्ता

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

सैनीपुरा से सेक्टर-9 की ओर जाने वाले पुराने टीकरी रास्ते को खुला रखने की मांग को लेकर क्षेत्र के लोगों ने विधायक राजेश जून से मुलाकात कर उन्हें मांग पत्र सौंपा। राजेश जून ने भरोसा दिलाया कि वे जल्द ही सीएम नायब सिंह सैनी से मुलाकात कर इस मार्ग को आमजन के लिए स्थायी रूप से खुला रखने की मांग करेंगे ताकि लोगों को भविष्य में किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े।

वार्ड-12 के पार्षद प्रतिनिधि योगेश धनखड़, पूर्व पार्षद जसबीर सैनी और धर्मेंद्र राठी के साथ स्थानीय लोगों ने विधायक राजेश जून को बताया कि इस रास्ते से असंख्य लोग दैनिक आवाजाही करते हैं। यदि इसे बंद किया गया तो स्थानीय निवासियों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। विधायक राजेश जून ने कहा कि सैनीपुरा से सेक्टर-9 की ओर जाने वाला यह मार्ग वर्षों से लोगों के आवागमन का प्रमुख रास्ता रहा है। पहले यह खेतों के बीच का कच्चा रास्ता था, लेकिन अब यह हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण के अधीन आ गया है। अभी तक संबंधित भूमि की मुआवजा प्रक्रिया पूरी नहीं हुई है और आशंका है कि विभाग इस रास्ते को बंद कर सकता है, जिससे क्षेत्र के लोगों का आवागमन पूरी तरह प्रभावित होगा। विधायक राजेश जून ने कहा कि जनता की इस महत्वपूर्ण समस्या को गंभीरता से लिया जाएगा। इस रास्ते को लेकर सरकार के स्तर पर सकारात्मक समाधान निकालने का हरसंभव प्रयास किया जाएगा। विधायक राजेश जून ने कहा कि जलभराव की समस्या का भी जल्द स्थायी समाधान कराया जाएगा।

सरेराह लोहे की ग्रिल काट ले गए चोर

बहादुरगढ़। शहर में चोरी की वारदात बढ़ रही हैं। पुलिस थाने के आसपास सरकारी संपत्ति को भी चोर नहीं छोड़ रहे। अब हाल ही में यहां रोहतक-दिल्ली पर मेट्रो ट्रैक के नीचे पौधों की सुरक्षा के लिए लगाई गई लोहे की ग्रिल के कुछ हिस्से को चोर काटकर ले गए। घटना मेट्रो पिलर नंबर-869 के पास की है। यहां पौधों की सुरक्षा के लिए दोनों तरफ ग्रिल लगाई गई है। करीब 2 करोड़ का यह प्रोजेक्ट है और काम अभी पूरा तक नहीं हुआ है। हैरानी भरी बात ये कि मार्ग पर चौबीसों घंटे आवागमन जारी रहता है और कुछ ही दूरी पर सिटी थाना है। इसके बावजूद चोर ग्रिल के कुछ हिस्से को काटकर ले गए।

याकूबपुर में निजी कंपनी से सरिया चोरी

झज्जर। याकूबपुर क्षेत्र की एक निजी कंपनी में कार्यरत सुपरवाइजर ने कंपनी से सरिया चोरी होने की शिकायत पुलिस को दी है। शिकायत में सुरेंद्र ने बताया कि वह इस फर्म में सुपरवाइजर के तौर पर काम करता है। इस कंपनी में निर्माण कार्य चल रहा है इसलिए काम के लिए सरिया आया हुआ था। बीती 11-12 जुलाई की रात को किसी ने कुछ सरिया चोरी कर लिया। पुलिस ने शिकायत के आधार पर मामला दर्ज करते हुए नियमानुसार आगामी कार्रवाई अमल में लाई जा रही है।

गोल्डन बेल्ट अंतरराष्ट्रीय मुक्केबाजी प्रतियोगिता में प्रियांशु ने जीता गोल्ड

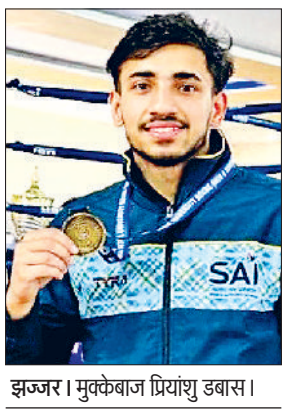

झज्जर। मुक्केबाज प्रियांशु डबास।

■ महर्षि दयानंद खेल स्टेडियम के खिलाड़ी ने रोमानिया में किया नाम रोशन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

महर्षि दयानंद खेल स्टेडियम के खिलाड़ी प्रियांशु डबास ने रोमानिया में आयोजित प्रतिष्ठित गोल्डन बेल्ट अंतरराष्ट्रीय मुक्केबाजी प्रतियोगिता में गोल्ड मेडल हासिल कर जिले व प्रदेश का गौरव बढ़ाया है। बॉक्सिंग कोच हितेश देशवाल ने बताया कि प्रियांशु डबास ने यह पदक 55 किलोग्राम भार वर्ग में खेलते हुए जीता है। वह अत्यंत मेहनती, अनुशासित और समर्पित खिलाड़ी हैं। इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर हरियाणा मुक्केबाजी संघ के अध्यक्ष मेजर सत्यपाल सिंधु, महासचिव ओमबीर हुड्डा, सोमबीर अहलावत व चुन्नी लाल सैनी ने विजेता खिलाड़ी को बधाई दी व उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

H.D. SR. SEC. SCHOOL
Salhawas (Jhajjar)

Heartiest Congratulations!
on your outstanding achievement in NEET 2026

DAKSH
MARKS 674/720
AIR 414

PUSHKAR
MARKS 665/720
AIR 703

RITESH JAKHAR
MARKS 626/720
AIR 4011

JATIN YADAV
MARKS 607/720
AIR 7886

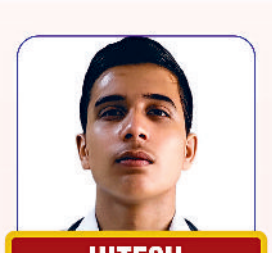

HITESH
MARKS 600/720
AIR 10101

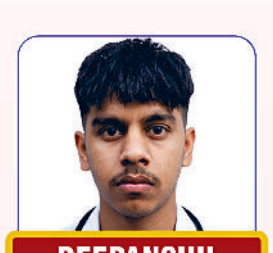

DEEPANSHU
MARKS 592/720
AIR 12941

MONU HEMANT
MARKS 563/720
AIR 27793

ANCHAL
MARKS 562/720
AIR 28445

YOGITA
MARKS 559/720
AIR 30909

TOTAL NEET QUALIFIERS -36

जेई एडवांस्ड 2026 में 8 विद्यार्थियों के चयन के बाद अब नीट में भी एच.डी. संस्थान ने एक बार फिर उत्कृष्ट परिणाम देकर अपनी सफलता की परंपरा को कायम रखा।

For Registration 8053182748 Transport Facility : 9996771677
www.hdsalhawas.co.in | email: hdschool.salhawas@gmail.com

मिड या स्मॉल-कैप फंड: 10 साल में किसने दिखाया दम

दोनों श्रेणियों ने दिया शानदार रिटर्न, लेकिन जोखिम और उतार-चढ़ाव में मिड-कैप

दोनों का निफ्टी-50 से बेहतर रहा प्रदर्शन

- सिर्फ ज्यादा रिटर्न पर न करें फैसला, पहले जोखिम व वोलैटिलिटी भी समझें
- स्मॉल-कैप ने बेंचमार्क को पीछे छोड़ा, मिड-कैप कम जोखिम संग बेहतर
- विशेषज्ञ बोले, गिरावट से घबराने के बजाय विविधीकृत पोर्टफोलियो अपनाएं
- दोनों फंडों में संपत्ति बनाने की क्षमता, लेकिन क्षमता के अनुसार करें फैसला
- विविधीकरण और लंबी अवधि बेहतर रिटर्न दिलाने की सबसे कारगर रणनीति

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड में निवेश करने वाले अधिकांश निवेशकों के सामने सबसे बड़ा सवाल होता है कि लंबी अवधि के लिए मिड-कैप फंड चुनें या स्मॉल-कैप फंड। दोनों श्रेणियों ने पिछले एक दशक में शानदार रिटर्न दिए हैं और निवेशकों की संपत्ति में उल्लेखनीय वृद्धि की है। हालांकि, सिर्फ रिटर्न देखकर निवेश का फैसला करना सही नहीं होता। किसी भी निवेश विकल्प का चयन करते समय उसके जोखिम, उतार-चढ़ाव, निवेश अवधि और वित्तीय लक्ष्य को भी ध्यान में रखना जरूरी है। एक रिपोर्ट के अनुसार पिछले 10 वर्षों में मिड-कैप और स्मॉल-कैप दोनों श्रेणियों ने लंबी अवधि के निवेशकों को आकर्षक रिटर्न दिया है। जहां स्मॉल-कैप फंड का औसत 10 वर्षीय वार्षिक रिटर्न (सीएजीआर) 16.69 प्रतिशत रहा, वहीं मिड-कैप फंड ने 16 प्रतिशत का औसत रिटर्न दिया। यानी दोनों के बीच रिटर्न का अंतर बहुत अधिक नहीं है, लेकिन जोखिम और प्रदर्शन के तरीके में स्पष्ट अंतर दिखाई देता है।

स्मॉल-कैप ने बेंचमार्क को पछाड़ा

आंकड़ों के अनुसार, स्मॉल-कैप फंड अपने बेंचमार्क बीएसई 250 स्मॉलकैप टोटल रिटर्न इनडेक्स से बेहतर प्रदर्शन करने में सफल रहे। दूसरी ओर, मिड-कैप फंड अपने बेंचमार्क बीएसई 150 मिडकैप टोटल रिटर्न इनडेक्स से थोड़ा पीछे रहे। इससे यह संकेत मिलता है कि स्मॉल-कैप फंड मैनेजरों ने बेहतर स्टॉक चयन के जरिए अतिरिक्त रिटर्न (अल्फा) बनाने में सफलता हासिल की। 10 वर्षों के प्रदर्शन में निप्पॉन इंडिया स्मॉल कैप डायरेक्ट, क्वांट स्मॉल कैप, एक्सिस स्मॉल कैप और एसबीआई स्मॉल कैप जैसे फंड शीर्ष प्रदर्शनकर्ताओं में शामिल रहे। वहीं मिड-कैप श्रेणी में इनवेस्को इंडिया मिड कैप, एडलवाइस मिड कैप, निप्पॉन इंडिया ग्रोथ और कोटक मिडकैप फंड ने बेहतरीन प्रदर्शन किया।

रिटर्न के साथ जोखिम भी समझें

अक्सर निवेशक केवल अधिक रिटर्न देखकर निवेश कर देते हैं, जबकि वास्तविक तस्वीर जोखिम के आंकड़ों से सामने आती है। पिछले तीन वर्षों के आंकड़ों के अनुसार, स्मॉल-कैप फंड का स्टैंडर्ड डिविएशन 20.33 प्रतिशत रहा, जबकि मिड-कैप फंड का यह आंकड़ा 17.88 प्रतिशत था। इसका मतलब है कि स्मॉल-कैप फंड में कीमतों का उतार-चढ़ाव ज्यादा रहा और इनमें निवेश करने वालों को अधिक अस्थिरता का सामना करना पड़ा। इसी तरह जोखिम के मुकाबले मिलने वाले रिटर्न को मापने वाले शार्प रेशियो में भी मिड-कैप फंड आगे रहे। मिड-कैप फंड का शार्प रेशियो 0.79 रहा, जबकि स्मॉल-कैप फंड का 0.69। इसका अर्थ है कि मिड-कैप फंड ने अपेक्षाकृत कम जोखिम लेकर बेहतर जोखिम-समायोजित रिटर्न दिया। हालांकि दोनों श्रेणियों का सॉर्टिनो रेशियो समान रहा, जिससे स्पष्ट होता है कि डाउनसाइड जोखिम को ध्यान में रखने पर दोनों का प्रदर्शन लगभग बराबर रहा।

लंबी अवधि के निवेशकों को मिला फायदा : विशेषज्ञों का मानना है कि पिछले 10 वर्षों की सबसे बड़ी सीख यही है कि जिन्होंने बाजार की गिरावट के दौरान घबराकर निवेश नहीं निकाला और लंबे समय तक निवेश बनाए रखा, उन्हें दोनों श्रेणियों में शानदार रिटर्न मिला। बाजार में गिरावट हर चक्र का सामान्य हिस्सा है और इसे निवेश यात्रा का स्वाभाविक चरण माना जाना चाहिए। मिड-कैप और स्मॉल-कैप फंड को केवल अधिक उतार-चढ़ाव के कारण नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। लंबी अवधि में दोनों श्रेणियों ने निफ्टी 50 से बेहतर प्रदर्शन किया है और निवेशकों के लिए अच्छी संपत्ति बनाने की क्षमता दिखाई है।

विविधीकरण सबसे बेहतर रणनीति

विशेषज्ञों का कहना है कि पूरे निवेश को केवल स्मॉल-कैप या केवल मिड-कैप में लगाना समझदारी नहीं है। बेहतर रणनीति यह है कि निवेशकों का पोर्टफोलियो सभी मार्केट कैप में संतुलित रूप से विभाजित हो। उदाहरण के तौर पर यदि किसी निवेशक के 10 लाख रुपये पूरी तरह स्मॉल-कैप फंड में लगे हों और बाजार में गिरावट आए, तो पूरे पोर्टफोलियो पर उसका असर पड़ेगा। जबकि यदि पोर्टफोलियो में लगभग 55 प्रतिशत लार्ज-कैप, 23 प्रतिशत मिड-कैप और 22 प्रतिशत स्मॉल-कैप का संतुलित निवेश हो, तो बाजार की गिरावट का प्रभाव काफी कम हो सकता है। यही कारण है कि वित्तीय योजनाकार हमेशा विविधीकरण को सफल निवेश की सबसे महत्वपूर्ण रणनीति मानते हैं।

किस निवेशक के लिए कौन सा फंड?

यदि आपकी निवेश अवधि 7 से 10 वर्ष या उससे अधिक है और आप बाजार के उतार-चढ़ाव को सहन कर सकते हैं, तो स्मॉल-कैप फंड आपके पोर्टफोलियो में बेहतर वृद्धि की संभावना जोड़ सकते हैं। वहीं यदि आप अच्छा रिटर्न चाहते हैं लेकिन अपेक्षाकृत कम जोखिम लेना पसंद करते हैं, तो मिड-कैप फंड अधिक उपयुक्त विकल्प हो सकते हैं। पहली बार निवेश करने वालों के लिए भी सलाह दी जाती है कि वे सीधे स्मॉल-कैप में बड़ी राशि लगाने के बजाय लार्ज-कैप और मिड-कैप के साथ सीमित हिस्सेदारी स्मॉल-कैप में रखें।

एसआईपी धन सृजन का सबसे प्रभावी तरीका

पिछले 10 वर्षों का रिकॉर्ड बताता है कि मिड-कैप और स्मॉल-कैप दोनों श्रेणियों ने निवेशकों को शानदार रिटर्न दिया है। जहां स्मॉल-कैप फंड ने थोड़ा अधिक रिटर्न और बेहतर अल्फा दिया, वहीं मिड-कैप फंड ने कम उतार-चढ़ाव और बेहतर जोखिम-समायोजित प्रदर्शन के दम पर अपनी अलग पहचान बनाई। निवेशकों को केवल अधिक रिटर्न के आकर्षण में निर्णय लेने के बजाय अपने वित्तीय लक्ष्य, निवेश अवधि और जोखिम उठाने की क्षमता के आधार पर पोर्टफोलियो तैयार करना चाहिए। नियमित एसआईपी, लंबी अवधि का नजरिया और विविधीकृत निवेश रणनीति ही धन सृजन का सबसे प्रभावी तरीका साबित हो सकती है।

बहुत ज्यादा एसआईपी से नहीं, सही रणनीति से बनेगी दौलत

नया म्यूचुअल फंड जोड़ने से पहले जांचें कि वास्तव में जरूरत है या नहीं

बिजनेस डेस्क

शेयर बाजार में बढ़ती जागरूकता के साथ म्यूचुअल फंड में निवेश करने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। बड़ी संख्या में निवेशक हर महीने सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) के जरिए निवेश कर रहे हैं। अक्सर यह धारणा बन जाती है कि जितने अधिक म्यूचुअल फंड होंगे, उतना ही बेहतर रिटर्न मिलेगा और जोखिम कम होगा। लेकिन निवेश विशेषज्ञों का कहना है कि यह सोच हमेशा सही नहीं होती। कई बार जरूरत से ज्यादा फंड रखने से पोर्टफोलियो में एक जैसी कंपनियों का दोहराव बढ़ जाता है, जिससे वास्तविक विविधीकरण नहीं हो पाता और निवेश का उद्देश्य भी प्रभावित हो सकता है।

फंडों की संख्या नहीं, गुणवत्ता और उद्देश्य है महत्वपूर्ण

विशेषज्ञों के अनुसार, किसी निवेशक के लिए कितनी एसआईपी या कितने म्यूचुअल फंड होने चाहिए, इसका कोई तय नियम नहीं है। यह पूरी तरह निवेश राशि, वित्तीय लक्ष्य, निवेश अवधि और जोखिम उठाने की क्षमता पर निर्भर करता है। यदि कोई निवेशक हर महीने 10 से 15 हजार रुपये की एसआईपी करता है, तो उसके लिए चार से छह अच्छे म्यूचुअल फंड पर्याप्त हो सकते हैं। वहीं, 40 से 50 हजार रुपये या उससे अधिक की मासिक एसआईपी करने वाले निवेशक आठ से दस फंड तक रख सकते हैं। हालांकि, इन फंडों का चयन अलग-अलग श्रेणियों और अलग-अलग एसेट मैनेजमेंट कंपनियों (एएमसी) से होना चाहिए, ताकि पोर्टफोलियो में वास्तविक विविधीकरण बना रहे।

ओवर-डाइवर्सिफिकेशन से भी हो सकता है नुकसान

निवेश में विविधीकरण जरूरी है, लेकिन जरूरत से ज्यादा विविधीकरण नुकसानदेह भी हो सकता है। यदि किसी निवेशक के कई फंड एक ही तरह की कंपनियों में निवेश करते हैं, तो फंडों की संख्या बढ़ने के बावजूद जोखिम कम नहीं होता। उदाहरण के लिए यदि किसी निवेशक के पास 10 इक्विटी फंड हैं और अधिकांश फंड एचडीएफसी बैंक, रिलायंस इंडस्ट्रीज, आईसीआईसीआई बैंक जैसी बड़ी कंपनियों में ही निवेश करते हैं, तो अलग-अलग स्कीम होने के बावजूद वास्तविक निवेश लगभग समान रहेगा। ऐसे में पोर्टफोलियो केवल दिखने में बड़ा होगा, लेकिन उसमें नई विविधता नहीं जुड़ेगी।

पोर्टफोलियो ओवरलैप पर रखें नजर

म्यूचुअल फंड चुनते समय सबसे महत्वपूर्ण बात पोर्टफोलियो ओवरलैप होती है। इसका अर्थ है कि दो अलग-अलग फंडों में कितनी समान कंपनियां शामिल हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि दो फंडों के बीच 20 से 30 प्रतिशत तक ओवरलैप है, तो इसे सामान्य माना जा सकता है। लेकिन यदि यह 40 से 50 प्रतिशत या उससे अधिक हो जाए, तो निवेशकों को अपने पोर्टफोलियो की समीक्षा करनी चाहिए। अधिक ओवरलैप का मतलब है कि अलग-अलग फंड रखने के बावजूद निवेश लगभग एक जैसी कंपनियों में ही हो रहा है।

हर नया एनएफओ खरीदना जरूरी नहीं

कई निवेशक बाजार में आने वाले हर नए म्यूचुअल फंड ऑफर (एनएफओ) में निवेश कर देते हैं। उन्हें लगता है कि नया फंड भविष्य में बेहतर रिटर्न देगा। जबकि वास्तविकता यह है कि किसी भी एनएफओ में निवेश करने से पहले उसकी निवेश रणनीति, उद्देश्य और मौजूदा पोर्टफोलियो से उसका अंतर समझना जरूरी है। यदि नया फंड वही काम कर रहा है जो पहले से मौजूद फंड कर रहे हैं, तो उसमें निवेश करना केवल दोहराव बढ़ाएगा।

संतुलित एसेट एलोकेशन है सफलता की कुंजी

विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि निवेशकों को बाजार की तेजी या गिरावट देखकर फैसले लेने से बचना चाहिए। इसके बजाय लक्ष्य आधारित निवेश रणनीति अपनानी चाहिए। इक्विटी पोर्टफोलियो में लगभग 55 प्रतिशत निवेश लार्ज कैप, 25 प्रतिशत मिड कैप और 20 प्रतिशत स्मॉल कैप फंड में रखने से संतुलन बनाया जा सकता है। इसके साथ ही जरूरत के अनुसार डेट फंड या अन्य परिसंपत्तियों में भी निवेश रखना चाहिए, ताकि बाजार में उतार-चढ़ाव का प्रभाव कम हो।

निवेशकों को मिला बड़ा फायदा

5 वर्ष में 101 इक्विटी फंड्स ने दोगुना किया निवेश

- 310 में से हर तीसरे फंड ने दिया 100% से अधिक रिटर्न
- चार स्कीमों ने सिर्फ तीन साल में किया कमाल
- पुराने रिटर्न देखकर निवेश न करें, सेक्टोरल फंड्स में लें एंट्री

बिजनेस डेस्क

शेयर बाजार में पिछले दो वर्षों के उतार-चढ़ाव के बावजूद लंबी अवधि में इक्विटी म्यूचुअल फंड्स ने निवेशकों को शानदार रिटर्न दिया है। आंकड़े बताते हैं कि पिछले पांच वर्षों में 310 इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में से 101 फंड्स ने निवेशकों का पैसा दोगुना या उससे अधिक कर दिया। यानी हर तीन में से लगभग एक इक्विटी फंड ने 100 फीसदी से ज्यादा एब्सोल्यूट रिटर्न दिया। इतना ही नहीं, चार म्यूचुअल फंड ऐसे भी रहे जिन्होंने केवल तीन वर्षों में ही निवेशकों का पैसा दोगुना कर दिया। हालांकि विशेषज्ञों का कहना है कि निवेश का फैसला केवल पुराने रिटर्न के आधार पर नहीं करना चाहिए, क्योंकि बाजार और सेक्टर का प्रदर्शन समय के साथ बदलता रहता है।

इंफ्रास्ट्रक्चर और पीएसयू फंड्स रहे सबसे आगे

पांच साल के प्रदर्शन पर नजर डालें तो सबसे अधिक फायदा सेक्टोरल और थीमैटिक फंड्स में निवेश करने वालों को मिला। खासतौर पर इंफ्रास्ट्रक्चर, पीएसयू, पावर और मिडकैप से जुड़े फंड्स ने जबरदस्त रिटर्न दिए।

सबसे आगे आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल इंफ्रास्ट्रक्चर फंड रहा, जिसने पांच साल में करीब 188 प्रतिशत का एब्सोल्यूट रिटर्न दिया। यानी एक लाख रुपये का निवेश लगभग 2.88 लाख रुपये हो गया। इसके बाद एसबीआई पीएसयू फंड और एलआईसी एमएफ इंफ्रास्ट्रक्चर फंड ने करीब 183 प्रतिशत का रिटर्न दिया। वहीं आदित्य बिड़ला सन लाइफ पीएसयू इक्विटी फंड ने 179 प्रतिशत, डीएसपी इंडिया टाइगर फंड ने 176.51 प्रतिशत और निप्पॉन इंडिया पावर एंड इंफ्रास्ट्रक्चर फंड ने लगभग 174 प्रतिशत का रिटर्न दिया। डायवर्सिफाइड मिडकैप श्रेणी में मोतीलाल ओसवाल मिडकैप फंड ने पांच वर्षों में करीब 172 प्रतिशत का रिटर्न देकर निवेशकों को शानदार कमाई कराई।

तीन साल में पैसा दोगुना करने वाले फंड

अगर केवल तीन वर्षों के प्रदर्शन को देखें तो एचडीएफसी डिफेंस फंड सबसे आगे रहा। इस फंड ने करीब 174 प्रतिशत का एब्सोल्यूट रिटर्न दिया। यानी तीन साल पहले लगाए गए एक लाख रुपये बढ़कर लगभग 2.74 लाख रुपये हो गए। इसके अलावा बंधन स्मॉल कैप फंड ने 106 प्रतिशत, क्वांट बीएफएसआई फंड ने 101.73 प्रतिशत और एलआईसी एमएफ इंफ्रास्ट्रक्चर फंड ने 100.24 प्रतिशत का रिटर्न देकर निवेशकों का पैसा दोगुना कर दिया। हालांकि एसबीआई पीएसयू फंड 99.12 प्रतिशत रिटर्न के साथ इस सूची में शामिल होने से मामूली अंतर से चूक गया।

किन सेक्टरों ने दिलाया सबसे ज्यादा फायदा

पिछले कुछ वर्षों में जिन सेक्टरों ने निवेशकों को सबसे अधिक लाभ पहुंचाया, उनमें डिफेंस, इंफ्रास्ट्रक्चर, पीएसयू, पावर, स्मॉलकैप, हेल्थकेयर और बैंकिंग एवं वित्तीय सेवाएं (बीएफएसआई) प्रमुख रहे। इन क्षेत्रों में सरकार के पूंजीगत खर्च, रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता, सार्वजनिक उपक्रमों के बेहतर प्रदर्शन और आर्थिक गतिविधियों में तेजी का सकारात्मक असर देखने को मिला। हालांकि विशेषज्ञों का कहना है कि सेक्टोरल फंड हमेशा एक जैसी तेजी नहीं दिखाते। इनमें तेजी और मंदी आर्थिक चक्र के अनुसार आती-जाती रहती है।

क्या अब भी इनमें निवेश करना सही रहेगा?

आनंद राठी वेल्थ के संयुक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी फिरोज अजीज का कहना है कि निवेशकों को केवल पिछले शानदार रिटर्न देखकर किसी सेक्टोरल या थीमैटिक फंड में निवेश नहीं करना चाहिए। किसी भी फंड का पिछला प्रदर्शन भविष्य में उसी तरह के रिटर्न की गारंटी नहीं देता। उनके अनुसार, सेक्टोरल फंड्स में सही समय पर निवेश करना और सही समय पर बाहर निकलना काफी महत्वपूर्ण होता है।

दो साल में कई स्टार फंड्स की रफ्तार हुई धीमी

- पांच वर्षों में शानदार प्रदर्शन करने वाले कई फंड्स का पिछले दो वर्षों का प्रदर्शन अपेक्षाकृत कमजोर रहा है।
- उदाहरण के लिए, आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल इंफ्रास्ट्रक्चर फंड ने पिछले दो वर्षों में केवल 5.28 प्रतिशत रिटर्न दिया। एसबीआई पीएसयू फंड का रिटर्न 0.75 प्रतिशत रहा, जबकि आदित्य बिड़ला सन लाइफ पीएसयू इक्विटी फंड और इनवेस्को इंडिया पीएसयू इक्विटी फंड ने इस अवधि में नकारात्मक रिटर्न दर्ज किया।
- इसी तरह एचडीएफसी इंफ्रास्ट्रक्चर फंड और डीएसपी इंडिया टाइगर फंड का प्रदर्शन भी पिछले दो वर्षों में काफी धीमा रहा। इससे साफ है कि किसी सेक्टर में तेज रैली के बाद कुछ समय तक ठहराव या गिरावट आना सामान्य बात है।

छोटी-छोटी बचत से बनाएं बड़ा फंड, भविष्य होगा सुरक्षित

- लाइफस्टाइल से समझौता किए बिना हर माह कुछ न कुछ बचत करें
- अच्छी बचत का मतलब कंजूसी नहीं, बल्कि समझदारी से खर्च करना
- आय, खर्च और निवेश के बीच संतुलन बनाया जाना जरूरी
- स्मार्ट मनी मैनेजमेंट से वर्तमान और भविष्य दोनों होंगे खुशहाल
- हर खरीदारी से पहले खुद से सवाल पूछें क्या यह वास्तव में जरूरी है

मनी मंत्रा
बिजनेस डेस्क

बढ़ती महंगाई, बदलती जीवनशैली और बढ़ते खर्चों के बीच हर व्यक्ति की सबसे बड़ी चिंता होती है कि आखिर बचत कैसे बढ़ाई जाए। आम धारणा यह है कि पैसे बचाने के लिए अपनी पसंद, शौक और मनोरंजन पर रोक लगानी पड़ती है, लेकिन वित्तीय विशेषज्ञों का कहना है कि अच्छी बचत का मतलब कंजूसी करना नहीं, बल्कि समझदारी से खर्च करना है। यदि आय, खर्च और निवेश के बीच संतुलन बनाया जाए तो बिना लाइफस्टाइल से समझौता किए हर महीने अच्छी-खासी बचत की जा सकती है। दरअसल, आज के समय में वित्तीय सुरक्षा केवल अधिक कमाई पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करती है कि कमाई का कितना हिस्सा सही तरीके से उपयोग और निवेश किया जा रहा है। यदि व्यक्ति छोटी-छोटी वित्तीय आदतों में बदलाव कर ले तो वह न केवल अपने मासिक खर्चों को नियंत्रित कर सकता है, बल्कि भविष्य के बड़े वित्तीय लक्ष्यों जैसे घर खरीदना, बच्चों की शिक्षा, रिटायरमेंट और इमरजेंसी फंड को भी आसानी से पूरा कर सकता है।

खर्चों का रिकॉर्ड रखना बचत की पहली सीढ़ी

वित्तीय योजना की शुरुआत हमेशा इस सवाल से होती है कि आपका पैसा आखिर खर्च कहां हो रहा है। अधिकांश लोग यह मानते हैं कि वे बहुत अधिक खर्च नहीं करते, लेकिन जब महीनेभर के बैंक स्टेटमेंट या डिजिटल भुगतान का रिकॉर्ड देखा जाता है तो कई ऐसे खर्च सामने आते हैं, जिनकी वास्तव में कोई जरूरत नहीं होती। बिना इस्तेमाल वाले ओटीटी सब्सक्रिप्शन, बार-बार ऑनलाइन खाना मंगाना, छोटी-छोटी ऑनलाइन शॉपिंग, महंगी कॉफी या बार-बार कैब का उपयोग जैसी आदतें महीने के अंत तक हजारों रुपये का अतिरिक्त खर्च करा देती हैं। यदि व्यक्ति अपने सभी खर्चों को मोबाइल ऐप, एक्सेल शीट या डायरी में दर्ज करना शुरू कर दे तो उसे तुरंत समझ आ जाएगा कि बचत की सबसे अधिक संभावना कहां है।

जरूरत और वैल्यू में फर्क समझना जरूरी

अक्सर लोग आकर्षक ऑफर या फैशन के प्रभाव में ऐसी चीजें खरीद लेते हैं, जिनकी उन्हें वास्तव में आवश्यकता नहीं होती। वित्तीय विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि हर खरीदारी से पहले खुद से तीन सवाल पूछें क्या यह वास्तव में जरूरी है? क्या इसका उपयोग लंबे समय तक होगा? और क्या इसे अभी खरीदना आवश्यक है? ऐसी वस्तुओं या अनुभवों पर खर्च करना बेहतर माना जाता है जो लंबे समय तक लाभ दें। उदाहरण के लिए, कोई नई स्किल सीखना, स्वास्थ्य पर खर्च करना, परिवार के साथ यात्रा करना या अच्छी किताबें खरीदना ऐसे निवेश हैं जो लंबे समय तक मूल्य देते हैं। इसके विपरीत केवल दिखावे के लिए की गई खरीदारी कुछ समय बाद महत्व खो देती है।

'फन बजट' बनाएं, बचत भी होगी व खुशी भी

कई लोग बचत करने के उत्साह में अपने सभी मनोरंजन संबंधी खर्च बंद कर देते हैं। शुरुआत में यह आसान लगता है, लेकिन कुछ समय बाद व्यक्ति मानसिक रूप से थक जाता है और फिर अचानक जरूरत से ज्यादा खर्च करने लगता है। इस स्थिति से बचने के लिए विशेषज्ञ हर महीने एक निश्चित राशि केवल मनोरंजन, घूमने-फिरने, फिल्म देखने या दोस्तों के साथ समय बिताने के लिए अलग रखने की सलाह देते हैं। इसे 'फन बजट' कहा जाता है। इससे व्यक्ति बिना किसी अपराधबोध के अपनी पसंद की गतिविधियों का आनंद ले सकता है और उसका कुल बजट भी नहीं बिगड़ता।

लाइफस्टाइल इन्फ्लेशन बड़ा वित्तीय जाल

वित्तीय दुनिया में एक शब्द काफी लोकप्रिय है। 'लाइफस्टाइल इन्फ्लेशन'। इसका मतलब है कि जैसे-जैसे आय बढ़ती है, वैसे-वैसे व्यक्ति अपने खर्च भी बढ़ा देता है। नई नौकरी मिलने पर महंगा मोबाइल खरीद लेना, वेतन बढ़ते ही लग्जरी कार की ईएमआई शुरू कर देना या हर सप्ताह महंगे रेस्टोरेंट जाना इसी प्रवृत्ति के उदाहरण हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि वेतन बढ़ने पर सबसे पहले बचत और निवेश की राशि बढ़ानी चाहिए। यदि हर वेतन वृद्धि का कम से कम 40 से 50 प्रतिशत हिस्सा सीधे एसआईपी, पीपीएफ, एनपीएस या अन्य निवेश विकल्पों में लगाया जाए तो कुछ वर्षों में बड़ा निवेश कोष तैयार किया जा सकता है।

रोजमर्रा की छोटी आदतों में करें बड़ा बदलाव

बचत के लिए हमेशा बड़े बदलाव की जरूरत नहीं होती। छोटी-छोटी आदतें भी लंबी अवधि में बड़ा असर डालती हैं। उदाहरण के लिए, किसी भी सामान को खरीदने से पहले ऑनलाइन कीमतों की तुलना करना, कैशबैक और डिस्काउंट ऑफर का लाभ उठाना, अनावश्यक गैजेट अपग्रेड से बचना, बिजली और पानी की बचत करना तथा सप्ताह में कुछ दिन बाहर खाने की बजाय घर का भोजन करना जैसी आदतें हर महीने अच्छी रकम बचा सकती हैं। इसी तरह क्रेडिट कार्ड का उपयोग केवल उतना ही करें, जितना समय पर चुका सकें। अनावश्यक ईएमआई से बचना और हर महीने आय का कम से कम 20 से 30 प्रतिशत बचत या निवेश के लिए अलग रखना वित्तीय अनुशासन का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है।

खबर संक्षेप

स्वास्थ्य शिविर में ग्रामीणों ने कराई जांच

झज्जर। वर्ल्ड मेडिकल कॉलेज रिसर्च एंड हॉस्पिटल गिरावड़ द्वारा क्षेत्र के गांव मदाना कलां में शनिवार को स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में अस्पताल के मेडिसिन विभाग, सर्जरी, नेत्र रोग, ईएनटी, हड्डी रोग, स्त्री एवं प्रसूति रोग विभाग के चिकित्सकों ने सेवाएं दीं। जिसमें काफी संख्या में लोगों ने शिविर में पहुंच कर अपनी स्वास्थ्य जांच कराई। कम्युनिटी मेडिसिन विभाग के डॉक्टर रजत गुप्ता व डॉक्टर शिवम सिंह ने बताया कि संस्थान के संस्थापक डॉक्टर नरेंद्र सिंह के नेतृत्व में आयोजित इस शिविर के दौरान लोगों को स्वास्थ्य की उचित देखभाल से भी अवगत कराया गया। इस दौरान चिकित्सकों द्वारा जरुरतमंद लोगों में जहां निःशुल्क दवाओं का वितरण किया वहीं उन्हें स्वास्थ्य की देखभाल संबंधी आवश्यक परामर्श भी दिया गया।

गांव के ही व्यक्ति पर लगाया चोरी का आरोप

झज्जर। क्षेत्र के गांव धौड़ में एक महिला ने गांव के ही एक व्यक्ति पर चोरी का आरोप लगाया है। पुलिस को दी शिकायत में पीड़िता ने बताया कि गांव का ही एक युवक उसके घर में घुस गया और चांदी व सोने के आभूषण चुरा ले गए। जब उन्होंने सीसीटीवी फुटेज चेक की तो उसमें चार अन्य युवक भी उसके साथ दिखाई देते हैं। पुलिस ने पीड़िता की शिकायत पर मामला दर्ज कर नियमानुसार आगामी कार्रवाई शुरू कर दी है।

पहाड़ीपुर गांव में खेत से मोटर ले गए चोर

झज्जर। क्षेत्र के गांव पहाड़ीपुर के खेतों से मोटर चोरी की शिकायत पीड़ित किसान द्वारा दी गई है। पुलिस को दी शिकायत में पलड़ा गांव निवासी किसान जसवंत सिंह ने बताया कि उसने पहाड़ीपुर में एक मरला ट्यूबवैल की जमीन खरीदी थी, जहां पर कमरा भी बनाया हुआ है। उसी कमरे में ट्यूबवैल पर सोलर पंप सेट लगाया हुआ है। जब वह खेत में गया तो कमरे से पीछे वाले से हिस्से से ईंटे उखाड़ कर कोई वहां लगी मोटर चुरा ले गया। इस बारे उसने आस-पास के लोगों से पूछताछ भी की लेकिन कुछ पता नहीं चल पाया। पुलिस द्वारा शिकायत के आधार पर मामला दर्ज करते हुए नियमानुसार आगामी कार्यवाई अमल में लाई जा रही है।

नूना माजरा में चलाया सफाई अभियान

बहादुरगढ़। शनिवार को नूना माजरा गांव में एक विशेष सफाई अभियान चलाया गया। श्री ओमवीर सिंह और बाबा रामदास इंस्टिट्यूट ऑफ स्पेशल एजुकेशन के बीएड स्पेशल एजुकेशन के छात्र-छात्राओं ने गांव के प्राचीन मंदिर परिसर तथा उसके आसपास सफाई अभियान चलाया। दिव्यांग बच्चों और बीएड के भावी शिक्षकों ने कूड़ा-कचरा साफ किया और पॉलिथीन मुक्त रखने के लिए प्रेरित किया। कॉलेज प्रबंधक नवीन देशवाल ने कहा कि पर्यावरण को स्वच्छ रखना हम सभी का परम कर्तव्य है।

निकासी के लिए जरूरी कदम उठाने की मांग

बहादुरगढ़। गांव सांखोल में बराही रोड स्थित गोशाला के सामने क्षेत्र में बरसात के दिनों जलभराव की गंभीर समस्या हो जाती है। हर साल लोगों को परेशानी झेलनी पड़ती है। इसे देखते हुए सांखोल के निवासी राजेश कल्सन व अन्य ग्रामीणों ने बीडीपीओ आफिस में पत्र देकर निकासी की दिशा में आवश्यक कदम उठाने की मांग की है। राजेश कल्सन का कहना है कि गोशाला के सामने स्थित क्षेत्र को इंदिरा कॉलोनी के नाम से जाना जाता है। यहां बरसाती और गंदे पानी के निकासी के पुख्ता बंदोबस्त नहीं हैं। पानी पंचायती जमीन में इकट्ठा हो जाता है। इससे दुर्गंध फैलती है, मच्छर पनपते हैं। इस वजह से डेंगू, मलेरिया फैलने का खतरा बन जाता है।

डीसी ने की गणना प्रपत्र भरकर तत्काल बीएलओ को सौंपने की अपील

जिले में करीब 4200 मतदाताओं ने जमा नहीं करवाए गणना प्रपत्र

गणना प्रपत्र प्राप्त होते ही उनका तत्काल किया जाएगा डिजिटलाइजेशन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

झज्जर। वर्षा खांगवाल, डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी।

डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी वर्षा खांगवाल ने कहा कि एसआईआर अभियान के तहत भले ही गणना प्रपत्र जमा कराने की अंतिम तिथि 24 जुलाई निर्धारित की गई है मगर शेष बचे मतदाता को इस तिथि का इंतजार नहीं करना है और तुरंत बीएलओ द्वारा दिए गए गणना प्रपत्र को भरकर बीएलओ को दें।

उन्होंने जिला के सभी पात्र मतदाताओं से अपील करते हुए कहा कि वे जल्द से जल्द अपना गणना प्रपत्र भरकर संबंधित बीएलओ को उपलब्ध कराएं अथवा ऑनलाइन माध्यम से स्वयं भरकर प्रक्रिया पूरी करें, ताकि मतदाता सूची के पुनरीक्षण का कार्य समयबद्ध ढंग से पूरा हो सके। उन्होंने कहा कि गणना प्रपत्र प्राप्त होते ही उनका तत्काल डिजिटलाइजेशन किया जाएगा। जिससे मतदाता सूची के एसआईआर का कार्य निर्धारित समय सीमा में पूरा किया जा सके। जिले भर में 4229 मतदाताओं ने अभी तक अपने गणना प्रपत्र जमा नहीं कराए है। जिसको लेकर बीएलओ डोर टू डोर जाकर दस्तक दे रहे हैं और जल्द प्रपत्र जमा कराने की अपील कर रहे हैं।

छात्राओं ने वोट डालकर जाना मतदान का महत्व

■ वैश्य आर्य कन्या विद्यालय में हुई त्रिदिवसीय चुनावी गतिविधि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

वैश्य आर्य कन्या विद्यालय में लीगल लिटरेसी क्लब द्वारा छात्राओं को लोकतांत्रिक प्रक्रिया से परिचित कराने के लिए त्रिदिवसीय चुनावी गतिविधि का आयोजन किया गया। छात्राओं ने बैलेट पेपर पर अपनी पसंद के उम्मीदवार के चुनाव चिह्न पर निशान लगाकर मतपेटी में अपना वोट डाला।

शनिवार को बहादुरगढ़ शिक्षा सभा के सहसचिव मूलचंद जोशी ने रिबन काटकर चुनावी गतिविधि का शुभारंभ किया। स्कूल निदेशक अनीता कौशिक ने इलेक्शन ऑफिसर बनी छात्रा से चुनावी प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त की और पूरी व्यवस्था का अवलोकन किया। चुनावी प्रक्रिया की शुरुआत 16 जुलाई को हेड गर्ल पद के लिए नामांकन से हुई। इसमें 12वीं कक्षा की 8 छात्राओं ने नामांकन पत्र दाखिल किए। जांच उपरांत उन्हें चुनाव चिह्न आवंटित किए गए। सभी उम्मीदवारों ने प्रार्थना सभा में अपने विचार रखे और अपने पक्ष में मतदान करने की अपील की। लीगल लिटरेसी क्लब की प्रभारी पूनम ने छात्राओं को मतदान, स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव के महत्व की जानकारी दी।

बहादुरगढ़। शनिवार को मतदान प्रक्रिया में भाग लेतीं छात्राएं। फोटो : हरिभूमि

शिक्षकों की देखरेख में संपन्न हुई प्रक्रिया

वास्तविक चुनावी प्रक्रिया में विद्यालय पहचान पत्र को मतदाता पहचान पत्र के रूप में प्रयोग किया गया। सुबह 9 बजे मतदान शुरू हुआ। तीन मतदान केंद्र बनाए गए। मतदान के दौरान प्रत्येक मतदाता छात्रा की उंगली पर स्याही भी लगाई गई। बूथ संख्या-1 पर कक्षा छठी से आठवीं, बूथ संख्या-2 पर कक्षा नौवीं व दसवीं तथा बूथ संख्या-3 पर कक्षा 11वीं व 12वीं की छात्राओं ने मतदान किया। संपूर्ण चुनाव प्रक्रिया शिक्षिकाओं की देखरेख में शांतिपूर्ण, अनुशासित और उत्साहपूर्ण वातावरण में संपन्न हुई।

झज्जर। छात्राओं को संबोधित करते हुए सीजेएम विशाल। फोटो : हरिभूमि

छात्राओं को बाल यौन शोषण अधिनियम की दी जानकारी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय खातीवास में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव एवं सीजेएम विशाल की अध्यक्षता में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सीजेएम विशाल ने छात्राओं को बाल यौन शोषण (पॉक्सो अधिनियम-2012) के प्रावधानों की विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि बच्चों को किसी भी प्रकार के शारीरिक, मानसिक अथवा यौन शोषण से सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से पॉक्सो अधिनियम बनाया गया है। उन्होंने छात्राओं को बताया कि यदि कोई व्यक्ति अनुचित स्पर्श, अभद्र व्यवहार, धमकी अथवा किसी भी प्रकार के शोषण का प्रयास करता है तो इसकी जानकारी बिना किसी भय के अपने माता-पिता, शिक्षकों, विद्यालय प्रशासन या पुलिस को तुरंत दें। उन्होंने कहा कि बच्चों की सुरक्षा समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है तथा जागरूकता ही ऐसे अपराधों की रोकथाम का सबसे प्रभावी माध्यम है। साथ ही छात्राओं को जिला विधिक सेवा प्राधिकरण हेल्प लाइन नंबर 01251-252013 व नालसा टॉल फ्री 15100 बारे अवगत कराया। कार्यक्रम के उपरांत विद्यालय परिसर में पौधरोपण किया गया। उन्होंने विद्यार्थियों एवं विद्यालय स्टाफ से अधिक से अधिक पौधे लगाने, उनकी नियमित देखभाल करने तथा पर्यावरण संरक्षण को जन-आंदोलन बनाने का आह्वान किया।

मातन में लगा योग-प्राणायाम शिविर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

शनिवार को गांव मातन के राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में योगाचार्य जगदीश कुमार सहवाग द्वारा देशभक्ति एवं निशुल्क योग-प्राणायाम शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय के प्राचार्य लोकेंद्र कुमार ने की।

कार्यक्रम में शिक्षक कवर सिंह, सुमन ढाका, अनीता देवी, शशि बूरा, सुनील कुमार, अमीता, शारदा, शालिनी तथा निशा के अलावा विद्यार्थियों ने भी उत्साहपूर्वक शिविर में भाग लिया। योगाचार्य जगदीश ने कहा कि योग हमें स्थिरता, धैर्य एवं परोपकार का संदेश देता है।

बहादुरगढ़। कार्यक्रम में विद्यार्थियों के साथ योगाचार्य जगदीश सहवाग।

सहवाग ने विद्यार्थियों को कारगिल विजय दिवस की वीरगाथा सुनाते हुए बताया कि कारगिल विजय दिवस प्रत्येक भारतीय को अपने वीर जवानों के त्याग, पराक्रम और बलिदान के प्रति सम्मान, कृतज्ञता तथा राष्ट्रसेवा की भावना को सुदृढ़ करने की प्रेरणा देता है। प्राचार्य लोकेंद्र कुमार ने योगाचार्य जगदीश कुमार का आभार व्यक्त करते हुए विद्यार्थियों से प्रतिदिन योग करने और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने का आह्वान किया।

एक्सप्रेस-वे हादसा: झज्जर में हुआ तीनों चालकों के शवों का पोस्टमार्टम

गांव डाबोदा के निकट केएमपी एक्सप्रेस-वे पर हुआ था हादसा, एक मृत चालक पर दर्ज हुआ है केस

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

गांव डाबोदा के निकट केएमपी एक्सप्रेस-वे पर हादसे में जान गंवाने वाले तीनों चालकों के शवों का पोस्टमार्टम झज्जर के नागरिक अस्पताल में करवाया गया। इस संबंध में एक मृतक चालक पर ही सदर थाने में केस दर्ज हुआ है।

मृतकों की पहचान राजेश निवासी कनीना महेंद्रगढ़, अनिल निवासी बुलंदशहर यूपी और चंदन निवासी झारखंड के रूप में हुई है। हादसा शुक्रवार की दोपहर हुआ था। शवों को बहादुरगढ़ के नागरिक अस्पताल लाया गया। यहां शवगृह की मरम्मत कार्य के चलते शवों को झज्जर के सरकारी अस्पताल भेजा गया।

मृतकों के परिजन आए तो पुलिस ने उनके बयान लिए। बयान के बाद केस दर्ज हुआ और इसके बाद पोस्टमार्टम की कार्रवाई शुरू कराई। कनीना गांव के निवासी प्रह्लाद सिंह का कहना है कि उसका छोटा भाई राजेश पेशे से चालक था। वह एक कंपनी में कैंटर चलाता था। शुक्रवार 17 जुलाई को मुंडका में गाड़ी खाली करके माल भरने के लिए राजस्थान जा रहा था।

जब डाबोदा खुर्द के पास केएमपी पर पहुंचा तो रास्ते में सड़क किनारे उसी की कंपनी की एक अन्य गाड़ी खड़ी थी। उसमें खराबी आई हुई थी। राजेश ने उस गाड़ी के चालक चंदन से बातचीत की। राजेश ने चंदन की गाड़ी को टोचन किया और चलने की तैयारी में थे। इसी दौरान पीछे से एक अन्य कैंटर ने टक्कर मारी। टक्कर लगते ही राजेश व चंदन कैंटर के नीचे दब गए और मौके पर ही मौत हो गई। जबकि टक्कर मारने वाले कैंटर का अनिल भी हादसे का शिकार हो गया। पुलिस ने शनिवार को परिजनों के बयान लेकर तीनों शवों के पोस्टमार्टम की कार्रवाई शुरू कराई। इस संबंध में राजेश के भाई प्रह्लाद की शिकायत पर मृतक चालक अनिल के नाम सदर थाने में केस दर्ज हुआ है।

बहादुरगढ़। खंभों पर लगाई जा रही नई लाइन। फोटो : हरिभूमि

आईएएस के मकान में सात दिन में तीसरी सेंध

रोहतक। शहर की पॉश डीएलएफ कॉलोनी में एक महिला आईएएस अधिकारी का बंद पड़ा मकान इन दिनों चोरों के निशाने पर है। हैरानी की बात यह है कि पिछले सात दिनों में इसी मकान में तीसरी बार चोरी की वारदात हुई है। ताजा घटना में बदमाश घर के अंदर घुसे और कीमती सामान के साथ नल की टोटियां तक उखाड़ ले गए। पूरी वारदात सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई, जबकि पड़ोसियों का दावा है कि रात के समय मौके के पास एक गाड़ी में दो पुलिसकर्मी भी मौजूद थे। हालांकि पुलिस का कहना है कि अभी तक इस संबंध में कोई आधिकारिक शिकायत नहीं मिली है। महिला आईएएस अधिकारी वर्तमान में नूंह में अतिरिक्त उपायुक्त (एडीसी) के पद पर तैनात हैं। उनका डीएलएफ कॉलोनी स्थित मकान लंबे समय से बंद पड़ा है और परिवार भी यहां नहीं रहता। मकान की देखरेख की जिम्मेदारी पड़ोस में रहने वाले एक व्यक्ति को सौंपी गई है। इसी का फायदा उठाकर चोर लगातार इस मकान को निशाना बना रहे हैं। मंगलवार देर रात करीब दो बजे दो युवक मकान के अंदर घुसे। मकान के बाहर लगे सीसीटीवी कैमरे में दोनों संदिग्ध गली से आते और घर में प्रवेश करते दिखाई दे रहे हैं। हालांकि मकान के अंदर और बाहर पर्याप्त रोशनी नहीं होने के कारण उनके बाहर निकलने की तस्वीर कैमरे में रिकॉर्ड नहीं हो सकी।

बहादुरगढ़। थैलियों में पौधों के बीज रोपित करती प्रिंसिपल व अन्य।

मांडोठी बाजार में बदली हाइटेंशन बिजली लाइन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

बिजली निगम की ओर से पुरानी हो चुकी तारों को लगातार बदला जा रहा है। इसी सिलसिले में शनिवार को मांडोठी बाजार में लाइन शिफ्टिंग का कार्य किया गया। सुरक्षा की दृष्टि से यहां खुली हाइटेंशन लाइन हटाकर एबीसी केबल लगाई गई है।

दरअसल, काफी वर्षों पहले लाइन डाली गई थी। इस हाइटेंशन लाइन के कारण आए दिन बंदर करंट लकर जान गंवा रहे थे। हादसों को देखते हुए लोगों द्वारा लगातार इन तारों को बदलने की मांग उठाई जा रही थी। इसे देखते हुए निगम ने शनिवार को कार्य शुरू किया। सुबह करीब 10 बजे लाइन बदलने का काम शुरू हुआ, जो करीब 5 बजे तक जारी रहा। इस दौरान आसपास क्षेत्र की बिजली आपूर्ति बाधित रही। निगम के जेई संदीप कुमार ने कहा कि सुरक्षा के लिहाज से यहां लाइन बदली जा रही है। सड़क के बीच से हटाकर सड़क किनारे पोल पर लाइन लगाई गई है। अब यहां करंट से बंदर आदि जीवों की जान नहीं जाएगी।

युवाओं को नशे के खिलाफ चेताया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बेरी

जिला पुलिस द्वारा चलाए जा रहे नशा मुक्ति अभियान के तहत गांव भागलपुरी में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें टीम ने गांव के युवाओं को नशे के दुष्प्रभावों से अवगत कराते हुए नशे से दूर रहने और स्वस्थ एवं सकारात्मक जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित किया।

प्रवक्ता ने बताया कि नशा मुक्ति टीम ने युवाओं को बताया कि नशा व्यक्ति, परिवार और समाज तीनों के लिए घातक है। इसके साथ ही टीम ने आपातकालीन सहायता के लिए डायल-112 सेवा की उपयोगिता तथा साइबर अपराधों से बचाव के उपायों की भी जानकारी दी। टीम ने आमजन से अपील करते हुए कहा कि किसी भी संदिग्ध गतिविधि, साइबर ठगी या अपराध की सूचना तुरंत पुलिस को दें और स्वयं भी जागरूक रहें तथा दूसरों को भी जागरूक करें।

बेरी। युवाओं को नशे के दुष्प्रभाव के प्रति जागरूक करते हुए पुलिस टीम।

दूध की खाली थैलियों में रोपे पौधों के बीज

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

वैश्य आर्य शिक्षण महिला महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. आशा शर्मा के नेतृत्व में संचालित तरु तरंग अभियान के अंतर्गत दूध की खाली थैलियों में विभिन्न प्रजातियों के बीज रोपित किए गए। इसके अलावा रतन टाटा फॉरेस्ट में फूलों व फलों के पौधे रोपित किए और बांटें। उन्होंने कहा कि यदि हर व्यक्ति एक बीज बोकर उसे पौधे के रूप में विकसित करने का संकल्प ले, तो आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ, स्वस्थ एवं हरित वातावरण मिलेगा। यूथ रेडक्रॉस प्रभारी दिव्या बंसल, आउटरीच व यूथ रेडक्रॉस प्रभारी सुनीता रानी, एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी अन्नू शर्मा, आउटरीच कन्वीनर प्रीत कमल, सदस्य सारिका, रेखा, अनिता, गायत्री तथा अजय ने प्लास्टिक की वेस्ट थैलियों में विभिन्न प्रजातियों के बीज रोपे।

समग्र शिक्षा एवं पीएम पोषण अभियान की समीक्षा

सरकार का फोकस विद्यार्थियों के विकास पर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

राजकीय विद्यालयों में विद्यार्थियों को बेहतर शैक्षणिक माहौल देने के साथ ही विद्यालय भवन के आधारभूत ढांचागत विकास पर सरकार पूरा फोकस कर रही है। ऐसे में ड्राप आउट व आउट ऑफ स्कूल वाले बच्चों को स्कूल सिस्टम से जोड़ने में शिक्षा विभाग अपनी जिम्मेदारी प्रभावी रूप से निभाएं। यह बात डीसी वर्षा खांगवाल ने शनिवार को शिक्षा विभाग के अधिकारियों के साथ समग्र शिक्षा व पीएम पोषण अभियान को लेकर मुख्य सचिव अनुराग रस्तोगी द्वारा ली गई वीसी उपरांत कही। उन्होंने समग्र शिक्षा एवं पीएम पोषण अभियान की प्रगति की समीक्षा करते हुए संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि सभी योजनाओं का लाभ पात्र विद्यार्थियों तक समयबद्ध और गुणवत्तापूर्ण तरीके से पहुंचे। उन्होंने कहा कि शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थियों के बेहतर स्वास्थ्य, पोषण और समग्र विकास पर विशेष ध्यान देना सरकार की प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि अब जो बच्चे किसी कारणवश स्कूल छोड़ चुके अथवा जो अभी तक स्कूल में दाखिल नहीं हो पाए हैं उन्हें नैतिक जिम्मेदारी के साथ स्कूल में दाखिल करवाने के लक्ष्य से कार्य करें।

झज्जर। अभियान की गतिविधियों बारे मुख्य सचिव को वीसी के जरिए अवगत करातीं डीसी वर्षा खांगवाल। फोटो : हरिभूमि

अघोषित बिजली कटौती पर सरकार को घेरा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

युवा इनेलो नेता भूपेंद्र नफे सिंह राठी ने लगातार बढ़ रही अघोषित बिजली कटौती पर गहरा रोष व्यक्त किया। उनके अनुसार भीषण गर्मी के बीच घंटों तक बिजली आपूर्ति बाधित रहने से आमजन का जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। लेकिन शासन और प्रशासन समस्या के समाधान के प्रति गंभीर दिखाई नहीं दे रहा।

भूपेंद्र राठी ने कहा कि प्रदेश में भाजपा सरकार बिजली व्यवस्था को सुदृढ़ करने के बड़े-बड़े दावे करती है, लेकिन जमीनी हकीकत इसके बिल्कुल विपरीत है। बहादुरगढ़ के नागरिक अघोषित बिजली कटौती, लो-वोल्टेज और बार-बार ट्रिपिंग की समस्या से परेशान हैं। घरों में बुजुर्गों, महिलाओं, बच्चों और मरीजों को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है, वहीं व्यापारियों और उद्योगों का कामकाज भी प्रभावित हो रहा है।

भूपेंद्र नफे सिंह राठी

सूचना

मैं, सुशीला देवी पत्नी स्व. श्री सुरेंद्र सिंह निवासी मकान नंबर-940, पटेल गार्डन, गली नंबर-3, बहादुरगढ़, जिला झज्जर, हरियाणा बयान करती हूं कि मेरे तीनों अविवाहित पुत्र मनजीत सिंह, मनोज कुमार व विनोद मेरे कहने सुनने से बाहर हैं और मैं उनसे अपने तमाम संबंध समाप्त करते हुए अपनी चल-अचल संपत्ति से बेदखल करती हूं। भविष्य में उनके साथ किसी तरह का लेन-देन करने व व्यवहार रखने वाला स्वयं जिम्मेवार होगा। मनजीत सिंह, मनोज कुमार व विनोद अपने प्रत्येक कार्य के लिए स्वयं जिम्मेवार होंगे। मेरा व मेरे परिवार के सदस्यों का उनसे कोई संबंध व सरोकार नहीं रहा।

सूचना

हम, संतोष रानी पत्नी श्री धनी राम व धनी राम पुत्र श्री अमीचन्द निवासी मकान नंबर-9ए, वार्ड नंबर-4, गली नंबर-3, सुभाष नगर लाईनपार, बहादुरगढ़, तहसील बहादुरगढ़, जिला झज्जर, हरियाणा बयान करते हैं कि हमारा पुत्र मुकेश व पुत्रवधु नेहा हमारे कहने-सुनने से बाहर हैं। इसलिये हम इनको अपनी चल-अचल सम्पत्ति से बेदखल करते हैं। इनसे लेन-देन, व्यवहार करने वाला स्वयं जिम्मेवार होगा। हमारी व हमारे परिवार की कोई जिम्मेवारी नहीं होगी।

खबर संक्षेप

बहादुरगढ़। विजेंद्र अहलावत से एनरोलमेंट प्राप्त करते तेजपाल दलाल।

इतिहास पढ़ाने के बाद अब वकालत करेंगे

बहादुरगढ़। दिल्ली सरकार में करीब 33 वर्ष तक इतिहास प्राध्यापक के रूप में कई हजार बच्चों को पढ़ाने के बाद तेजपाल दलाल अब अधिवक्ता के रूप में समाज को सेवाएं देंगे। खेल बढ़ेगा अपराध घटेगा मुहिम चलाने वाले तेजपाल 2 बार नेशनल अवार्ड और दिल्ली राज्य शिक्षक पुरस्कार भी प्राप्त कर चुके हैं।

बहादुरगढ़। जन रक्षा मंच के पदाधिकारियों को सम्मानित करते अशोक राठी।

सामाजिक कार्यों के लिए किया सम्मानित

बहादुरगढ़। गांव परनाला में हुए एक कार्यक्रम में जन रक्षा मंच के पदाधिकारी विजय समेत अन्य को सामाजिक कार्यों के लिए सम्मानित किया गया। सरपंच एसोसिएशन के प्रधान अशोक राठी ने उन्हें सामाजिक कार्यों में सहयोग के लिए शॉल व शील्ड देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर राजीव, सचिन, नरेंद्र लांबा, प्रीतम, प्रहलाद व भूप आदि मौजूद रहे।

रिटायर्ड कर्मचारी संघ की बैठक कल

झज्जर। रिटायर्ड कर्मचारी संघ की जिला इकाई की मीटिंग सोमवार को पुरानी तहसील रोड स्थित जलघर परिसर में होगी। जिला सचिव देवेंद्र सिंह यादव ने बताया कि मीटिंग में प्रदेशाध्यक्ष मास्टर वजीर सिंह मुख्यातिथि के रूप में शिरकत करते हुए कर्मचारियों की लंबित मांगों पर बातचीत करेंगे। जिला प्रधान दिलबाग दलाल बताया कि कर्मचारियों द्वारा जहां 29 सितंबर से 30 सितंबर तक सभी जिला मुख्यालयों पर धरना दिया जाएगा।

टीचर कॉलोनी में मकान के बाहर खड़ी बाइक चोरी

बहादुरगढ़। शहर की टीचर कॉलोनी में मकान के बाहर से बाइक चोरी हो गई। शिकायतकर्ता संगीता का कहना है कि उनकी बाइक 16 जुलाई की रात को बाहर गली में खड़ी की थी। कोई अज्ञात शख्स चुरा ले गया। अपने स्तर पर तलाश की लेकिन नहीं मिली। उधर, सिटी पुलिस ने चोरी का केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

दो महीने से शुद्ध पानी को तरसे लोग, बार-बार खुदाई पर उठ रहे सवाल

शास्त्री नगर में सीवर ठप, जलापूर्ति ध्वस्त व सड़क भी क्षतिग्रस्त हो गई

जलापूर्ति एवं अभियांत्रिकी विभाग के अधिकारियों पर लापरवाही का आरोप

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

शहर के नजफगढ़ रोड पर स्थित शास्त्री नगर इन दिनों पेयजल संकट, बदहाल सीवरेज व्यवस्था और बार-बार की जा रही खुदाई के कारण गंभीर समस्याओं से जूझ रहा है। यहां अधिकांश घरों में दूषित पानी पहुंच रहा था। सीवरेज का गंदा पानी ओवरफ्लो होकर सड़क पर भरा था।

सिटी पल्स

रिपेयर के नाम पर विभाग कई दिनों से केवल सड़क उखाड़ने में जुटा है। लगातार बनी इस्थिति से लोगों में जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग (पीएचईडी) के प्रति नाराजगी बढ़ती जा रही है। वार्ड नंबर-14 के शास्त्री नगर में समस्या केवल पेयजल तक सीमित नहीं है। सीवर जाम होने और ओवरफ्लो के कारण गलियों में गंदा पानी जमा रहता है, जिससे दुर्गंध और संक्रमण फैलने का खतरा बना हुआ है।

वहीं नजफगढ़ रोड पर बार-बार खुदाई होने से सड़कें क्षतिग्रस्त हो गई हैं। गहरे गड्ढों और उखड़ी सड़कों के कारण वाहन चालकों और पैदल राहगीरों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। बारिश के दौरान इन गड्ढों में पानी भर जाने से हादसों की आशंका भी बनी रहती है। समस्या के समधान के लिए प्रयासरत स्थानीय निवासी दीपक दूहन ने बताया कि सीवर और पेयजल लाइन की समस्या दूर करने के लिए कुछ दिन पहले नजफगढ़ रोड पर खुदाई कर कनेक्शन जोड़े गए थे, लेकिन तकनीकी त्रुटि के कारण समस्या का हल नहीं हुआ। अब विभाग ने दोबारा खुदाई कर नया चैंबर बनाया है।

बहादुरगढ़। नजफगढ़ रोड पर पाइपलाइन की मरम्मत में जुटे कर्मचारी। फोटो : हरिभूमि

दो महीने से नहीं मिल रहा शुद्ध पानी

धर्मबीर राठी का कहना है कि दो महीने से शुद्ध पानी नहीं मिल रहा। पीने के पानी तक के लिए रोजाना जद्दोजहद करनी पड़ रही है। दूषित पानी के कारण स्वास्थ्य को लेकर चिंता बनी रहती है। कई बार शिकायत करने के बावजूद समस्या का समाधान नहीं हुआ। एक ही जगह बार-बार खुदाई इस बात का संकेत है कि काम बिना उचित योजना के किया जा रहा है। इससे सरकारी धन की बर्बादी के साथ-साथ आम लोगों को भी बेवजह परेशान होना पड़ रहा है।

टैंकरों से पानी खरीदने पर मजबूर

संदीप वर्मा का कहना है कि सुबह-शाम पानी भरने के लिए घंटों इंतजार करना पड़ता है। कई परिवारों को पीने के पानी के लिए टैंकरों या बाजार से पानी खरीदने पर मजबूर होना पड़ रहा है। दूसरी ओर सीवर जाम होने से घरों के बाहर गंदा पानी जमा रहता है, जिससे बच्चों, बुजुर्गों और महिलाओं को सबसे अधिक परेशानी झेलनी पड़ रही है। लगातार गंदगी रहने से मच्छरों का प्रकोप बढ़ गया है और बीमारियों का खतरा भी मंडरा रहा है।

घरों के बाहर सीवर का गंदा पानी जमा

प्रदीप राठी का कहना है कि घरों के बाहर सीवर का गंदा पानी जमा रहने से बदबू और मच्छरों का प्रकोप बढ़ गया है। दूषित जलापूर्ति से बीमारी फैलने का डर बना रहता है। टूटी सड़कें और खुदाई के कारण बच्चों का स्कूल आना-जाना जोखिम भरा हो गया है। खुदाई के कारण रोजाना जाम की स्थिति बनती है। केवल अस्थायी मरम्मत नहीं, बल्कि पेयजल और सीवरेज व्यवस्था का स्थायी समाधान चाहिए। साथ ही सड़क की मरम्मत कर आवागमन को भी जल्द सामान्य बनाया जाए।

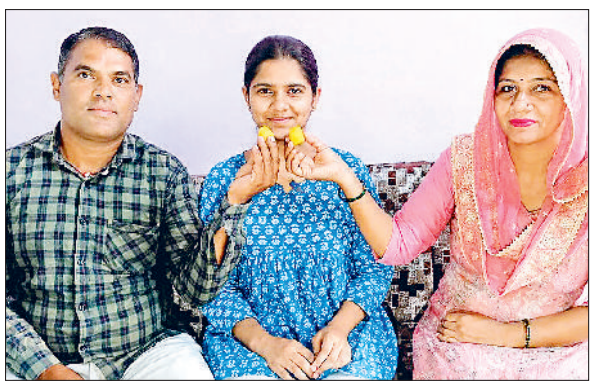

बेरी। होनहार छात्रा शगुन को मिठाई खिलाते हुए उसके माता-पिता।

सिवाना गांव की बेटी शगुन का एमबीबीएस में चयन

लखन जी मिश्रा ⏭ बेरी

उपमंडल के गांव सिवाना की होनहार बेटी शगुन का चयन एमबीबीएस में हुआ है। शगुन के पिता डॉक्टर सुनील नेहरा ने बताया कि इस शानदार उपलब्धि से पूरे क्षेत्र में खुशी की लहर है। शगुन की प्रारंभिक शिक्षा एमजी पब्लिक स्कूल दूबलधन से हुई। इसके बाद उसने ब्रिगेडियर रणसिंह पब्लिक स्कूल दुजाना से दसवीं तथा मेडिकल साइंस संकाय से बारहवीं उत्तीर्ण कर अपने लक्ष्य की ओर कदम बढ़ाए। अब अपनी कड़ी मेहनत के दम पर एमबीबीएस में चयनित होकर सफलता का नया मुकाम हासिल किया है। उपलब्धि के बाद शगुन के घर बधाई देने वाले लोगों का तांता लगा है। पिछले वर्ष शगुन के छोटे भाई शुभम का चयन भी भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान में हुआ था। बता दें कि शगुन के पिता डॉ. सुनील कुमार नेहरा पशुपालन विभाग में कार्यरत हैं, जबकि उनकी मां पूनम देवी गृहिणी हैं।

वैदिक यज्ञ को दैनिक जीवन में अपनाने का किया आह्वान

भजनों के माध्यम से आर्य समाज की शिक्षाओं पर डाला प्रकाश

हरिभूमि न्यूज ⏭ झज्जर

जातिवाद, पाखंड, दहेज प्रथा जैसी कुरीतियों के विरुद्ध लोगों को जागरूक करने के लिए प्राचीन गुरुकुल महाविद्यालय द्वारा निकाली जा रही यज्ञ एवं वेद प्रचार यात्रा दूसरे दिन शहर के शहीदी पार्क को पहुंची। गुरुकुल के अधिष्ठाता आचार्य विजयपाल के सान्निध्य में जारी इस यात्रा का शहर पहुंचने पर आर्य समाज मंदिर समिति द्वारा स्वागत किया गया।

आर्य समाज के प्रधान लाला प्रकाशवीर और महामंत्री नरेश देशवाल की अगुवाई में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा यज्ञ कराया गया। यात्रा में साथ चल रहे भजनोपदेशक कुलदीप भास्कर ने अपने मधुर भजनों के माध्यम से समाज में फैली दहेज प्रथा, पाखंड, अंधविश्वास, नशाखोरी व जातिवाद जैसी कुरीतियों से देश को हो रहे नुकसान पर प्रकाश डाला और इनसे दूर रहने का आह्वान किया। आचार्य विजयपाल ने कहा कि इन कुरीतियों के समाज में बने रहने से धीरे धीरे समाज में चरित्रहीनता भी बढ़ रही है जो निःसन्देह इसके पतन का कारण है। उन्होंने महर्षि दयानंद द्वारा दी गई आर्य समाज की शिक्षाओं पर बल डालते हुए वैदिक यज्ञ को दैनिक जीवन का हिस्सा बनाने और आर्य समाज के नियमों का जीवन में अपनाने का आह्वान किया। इस मौके पर आर्य समाज के संरक्षक सतपाल देशवाल, आनंद देशवाल, राजीव आर्य, जितेंद्र बरानी, जयभगवान आर्य, महाशय रतिराम, अनुज सहित अन्य भी उपस्थित रहे। प्राचीन गुरुकुल महाविद्यालय की यह यात्रा आगामी 25 जुलाई तक जिले के विभिन्न गांव में पहुंचकर वेद प्रचार करेगी, जिसका समापन छप्पार गांव में होगा।

झज्जर। यज्ञ एवं वेद प्रचार कार्यक्रम के दौरान शहीदी पार्क में उपस्थित आर्यजन व शहरवासी। फोटो : हरिभूमि

झज्जर। होनहार प्रतिभागी विजयी चिन्ह बनाते हुए। फोटो : हरिभूमि

हरियाणा स्विमिंग टीम के हुए ट्रायल

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

जयपुर में प्रस्तावित सब जूनियर नेशनल स्विमिंग चैंपियनशिप के लिए एचएल सिटी स्थित चैंपियंस एक्वेटिक एकेडमी में हरियाणा की टीम की ट्रायल प्रतियोगिता हुई। प्रतियोगिता का शुभारंभ हरियाणा स्विमिंग एसोसिएशन के महासचिव अनिल खत्री ने किया। चयनित खिलाड़ी अब 6 से 9 अगस्त तक जयपुर में हरियाणा का प्रतिनिधित्व करेंगे। चयनकर्ताओं ने खिलाड़ियों के प्रदर्शन का बारीकी से आकलन किया और सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले तैराकों का चयन राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए किया। इस अवसर पर रवि सिंघरी, कोच साईं जाधव, पदमपाल शर्मा, सुनील खत्री, रविंद्र, अनिल शर्मा, हरबीर, सत्यनारायण शर्मा, हनुमान खत्री मौजूद रहे।

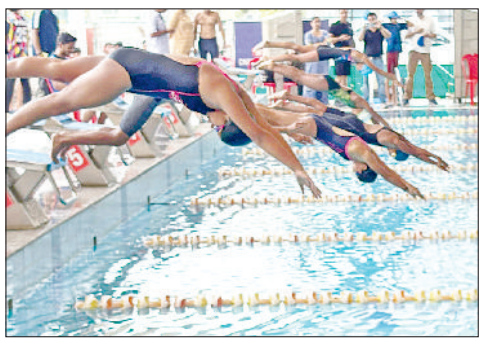

बहादुरगढ़। नेशनल सब जूनियर के लिए टाइम ट्रायल देते तैराक।

अंतरसदनीय सामाजिक अध्ययन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में पटेल सदन ने पाया पहला स्थान

झज्जर। एच डी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय साल्हावास में अंतरसदनीय सामाजिक अध्ययन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें छठी से आठवीं तक की कक्षाओं के विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्राचार्या प्रीति राठी की अध्यक्षता में आयोजित इस प्रतियोगिता में सामाजिक अध्ययन के अध्यापक अनिल सुहाग और राहुल जांघु ने निर्णायक की भूमिका निभाई। मिडल हेड अनीता यादव ने कुशल मंच संचालन करते हुए बताया कि विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास एवं सामाजिक अध्ययन विषय के प्रति रुचि बढ़ाने के उद्देश्य से आयोजित इस प्रतियोगिता में पटेल सदन की टीम इप्सिका, प्राची, नवनीत, पीयुष, दक्ष और समीर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, वहीं अटल सदन की टीम यश, हार्दिक, इशान्त, तन्मय, आरती और हिमांशी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता में रमन सदन तृतीय स्थान पर रहा जबकि कलाम सदन को सांत्वना पुरस्कार से संतोष करना पड़ा। एच डी ग्रुप सचिव हेमंत गुलिया ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि इस प्रकार की शैक्षणिक प्रतियोगिताएं विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धा की भावना, तार्किक चिंतन, सामान्य ज्ञान और आत्मविश्वास को विकसित करती हैं। वहीं एच डी ग्रुप डायरेक्टर रमेश गुलिया व सचिव विशाल नेहरा ने विजेता विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
बहादुरगढ़ : सूरजमल वाली गली, गणपति ट्रैवलर्स के ऊपर, नजदीक टैक्सी स्टैंड, बहादुरगढ़
झज्जर :- पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, झज्जर
फोन : 8295738500, 8814999142, 8295157800, 9253681005

बुखार को सामान्य समझकर स्वयं दवा लेने से बचें, चिकित्सक से परामर्श जरूरी

मानसून में संक्रमण का खतरा बढ़ा

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

बारिश के मौसम में संक्रमण और मौसमी बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। जलभराव, गंदा पानी, उमस, मौसम में बदलाव और मच्छरों की बढ़ती संख्या के कारण डेंगू, मलेरिया, चिकनगुनिया, वायरल बुखार, टाइफाइड, दस्त, उल्टी, त्वचा रोग और सांस संबंधी समस्याएं लोगों को परेशान कर सकती हैं। ब्रह्मशक्ति संजीवनी अस्पताल के फिजिशियन डॉ. बीएन मिश्रा ने लोगों को बारिश के मौसम में स्वास्थ्य के प्रति विशेष सावधानी बरतने की सलाह दी है।

डॉ. बीएन मिश्रा ने बताया कि बारिश के दौरान घरों और आसपास पानी जमा होने से मच्छरों के प्रजनन का खतरा बढ़ जाता है। कूलर, गमले, पुराने टायर, खाली डिब्बे, छतों और अन्य स्थानों पर जमा पानी मच्छरों के पनपने का कारण बन सकता है। इसलिए घर और आसपास पानी जमा नहीं होने देना चाहिए। कूलर का पानी नियमित रूप से बदलना, पानी की टंकियों को ढककर रखना चाहिए। मच्छरजनित बीमारियों से बचने के लिए पूरे शरीर को ढकने वाले कपड़े पहनने और मच्छरों से बचाव के उपाय अपनाने चाहिए। उन्होंने कहा कि बारिश के मौसम में दूषित पानी के कारण दस्त, उल्टी, टाइफाइड और पीलिया जैसी जलजनित बीमारियों का खतरा भी बढ़ जाता है। लोगों को केवल साफ और सुरक्षित पानी का सेवन करना चाहिए। खुले में रखे खाद्य पदार्थ, कटे हुए फल, अस्वच्छ पानी से बनी खाद्य सामग्री और बासी भोजन से बचना चाहिए। खाने से पहले हाथों को अच्छी तरह धोना भी बेहद जरूरी है।

बच्चों और बुजुर्गों का विशेष ध्यान रखना जरूरी

डॉ. बीएन मिश्रा ने लोगों को बुखार को सामान्य समझकर स्वयं दवा लेने से बचने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि डेंगू, मलेरिया, चिकनगुनिया और वायरल संक्रमण के शुरुआती लक्षण कई बार मिलते-जुलते हो सकते हैं। तेज बुखार, ठंड लगना, शरीर में अत्यधिक दर्द, सिरदर्द, कमजोरी, उल्टी, त्वचा पर दाने या लगातार तबीयत बिगड़ने पर चिकित्सक से परामर्श लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि बारिश में भीगने के बाद गीले कपड़ों में अधिक देर तक नहीं रहना चाहिए और जल्द कपड़े बदल लेने चाहिए। बच्चों और बुजुर्गों का विशेष ध्यान रखना जरूरी है।

कभी बादल छाए तो कभी तेज धूप निकली

बहादुरगढ़। शनिवार को इलाके में दिनभर मौसम बदलता रहा। कभी आसमान में बादल छाए तो कभी तेज धूप निकली। उमसभरी गर्मी ने भी लोगों को खूब परेशान किया। अधिकतम तापमान 38 डिग्री दर्ज किया गया। दरअसल, बीते कुछ दिनों से इलाके में इसी तरह का मौसम बना हुआ है। आठ जुलाई के बाद ठीक से बरसात नहीं हो पाई है। आसमान में बादल छाते जरूर है लेकिन बरस नहीं रहे। इस वजह से उमस भरी गर्मी लोगों को सता रही है। हालांकि रविवार के बाद बरसात के आसार बन रहे हैं।

न्यूज डायरी

बहादुरगढ़। कार्यक्रम में शिक्षकों को आधुनिक प्रशिक्षण देते मास्टर ट्रेनर।

प्रशिक्षण में शिक्षकों ने सीखी आधुनिक तकनीक

बहादुरगढ़। गांव नूना माजरा स्थित राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में 10 सरकारी विद्यालयों में स्थापित अटल टिंकरिंग लैब के प्रभावी संचालन के लिए आयोजित चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शनिवार को समापन हो गया। कार्यक्रम का शुभारंभ डीईओ रतिंद्र सिंह ने किया था, जबकि सीएमजीजीए खुशी कौशल ने प्रशिक्षण के दौरान कार्यशाला का अवलोकन कर प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया। शिक्षा विभाग हरियाणा व समग्र शिक्षा हरियाणा परिषद के निर्देशानुसार जिला परियोजना समन्वयक अनिल शर्मा की देखरेख में प्रशिक्षण कार्यक्रम हुआ। डीईओ रतिंद्र सिंह ने बताया कि अटल टिंकरिंग लैब विद्यार्थियों की वैज्ञानिक प्रतिभा को निखारने का प्रभावी मंच है। उन्होंने सभी प्रधानाचार्यों एवं शिक्षकों से अटल टिंकरिंग लैब को नवाचार, अनुसंधान एवं रचनात्मक शिक्षा का प्रभावी केंद्र बनाने का आह्वान किया। सीएमजीजीए खुशी कौशल ने कार्यशाला का निरीक्षण किया। मास्टर ट्रेनर आकाश ने प्रतिभागियों को विभिन्न आधुनिक उपकरणों का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया। कार्यक्रम में डीपीसी अनिल शर्मा, रिसोर्स पर्सन के रूप में मदन सिंह, पुनीता चौधरी व वंदना भारद्वाज मौजूद रहे।

झज्जर। शिक्षकों के साथ येलो-डे पर पीली वेशभूषा में एकत्रित विद्यार्थी।

पीले रंग की वेशभूषा में स्कूल पहुंचे विद्यार्थी

झज्जर। पैरामाउंट स्कूल छुछकवास में शनिवार को येलो-डे मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ संस्था निदेशक इंद्रजीत फौगाट ने किया। उन्होंने विद्यार्थियों को इस प्रकार के कार्यक्रमों में भागीदारी के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थी पीले रंग की वेशभूषा में स्कूल पहुंचे। इस दौरान उन्होंने पीले रंग वाले फल जैसे केले, पपीता व अन्य खाद्य सामग्री का आनंद लिया। निदेशक मंजीत फौगाट ने भी विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

झज्जर। कार्यक्रम के दौरान आकर्षक वेशभूषा में नन्हें विद्यार्थी स्कूल स्टाफ सदस्यों के साथ।

जंगल डे सेलिब्रेशन कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने दिखाई प्रतिभा

झज्जर। एल ए वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के प्री-प्राइमरी विंग में जंगल डे सेलिब्रेशन का रंगारंग आयोजन किया गया। नन्हें-मुन्नें विद्यार्थियों ने विभिन्न जंगली जानवरों की आकर्षक वेशभूषा धारण कर सभी का मन मोह लिया। इसके साथ ही बच्चों ने पूरे आत्मविश्वास के साथ रैंप वॉक कर अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया। प्राचार्या डॉक्टर निधि कादियान एवं अनीता गुलिया ने बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि इस प्रकार की गतिविधियां बच्चों के सर्वांगीण विकास, रचनात्मक सोच, आत्मविश्वास तथा प्रकृति एवं वन्य जीवों के प्रति प्रेम और संवेदनशीलता विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस दौरान जगपाल गुलिया, के एम डागर, अनीता दहिया, जयदेव दहिया, नीलम दहिया सहित अन्य भी मौजूद रहे।

हिंदी व अंग्रेजी रीडिंग प्रतियोगिता हुई

बहादुरगढ़। लडरावण स्थित श्री स्वामी समर्थ इंटरनेशनल स्कूल में विद्यार्थियों के भाषा कौशल एवं आत्मविश्वास को विकसित करने के उद्देश्य से हिंदी एवं अंग्रेजी रीडिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विभिन्न कक्षाओं के विद्यार्थियों ने अपनी प्रभावशाली वाचन शैली से सभी को प्रभावित किया। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। तीसरी कक्षा के शिवांश, प्राची, आव्या प्रथम स्थान, काव्या, भव्या, कार्तिक द्वितीय स्थान पर रहे। चौथी कक्षा की राखी, माही, खुशी, दीपिका प्रथम स्थान, मानवी, यशी, कायरा, तृप्ति, दिव्यांशी, कनक द्वितीय स्थान पर रहे। पांचवीं कक्षा के शौर्य, नव्या, अंशिका, परी, रिद्धि, तक्ष, आयुष, कार्तिक, ध्रुव, अवि, रिद्धि छिकारा, आहना प्रथम स्थान, लक्ष्य, रजनीश, भाविक, लक्षिता द्वितीय स्थान पर रहे। छठी कक्षा की मानवी, यश्मीत, निक्की, तनवि, शिवांगी प्रथम स्थान, नव्या, नंदिनी, आर्यन, छवि द्वितीय स्थान पर रहे। सातवीं कक्षा के सागर, पूर्व, नक्ष, यशिका, अवनि, प्रज्ञा, पूजा, दीपांशी प्रथम स्थान, हर्ष, चिराग, सिया, हर्षिता द्वितीय स्थान पर रहे। आठवी कक्षा के जीवांश, वाणी, नियति प्रथम स्थान, वर्षा, शुभम, वंश खत्री द्वितीय स्थान पर रहे। नौंवी कक्षा के हन्नी वर्मा, हन्नी छिकारा, पार्थ, केयन, हार्दिक, नव्या प्रथम स्थान, पावनी, हितेन, रजत, परी, यश छिकारा द्वितीय स्थान पर रहे। स्कूल चेयरमैन अभिषेक छिल्लर ने सभी प्रतिभागियों की सराहना की तथा विजेता विद्यार्थियों को बधाई देते हुए निरंतर अभ्यास करने के लिए प्रेरित किया।

नेहरू कॉलेज में हुआ कॉलेज लेक्चरर वेलफेयर एसोसिएशन चुनाव का मतदान

झज्जर। राजकीय स्नातकोत्तर नेहरू महाविद्यालय में कॉलेज लेक्चरर वेलफेयर एसोसिएशन के राज्य स्तरीय चुनाव के तहत प्रधान पद के लिए मतदान शांतिपूर्ण संपन्न हुआ। चुनाव प्रक्रिया में जिले के विभिन्न राजकीय महाविद्यालयों में कार्यरत एक्सटेंशन लेक्चररों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और अपने मताधिकार का प्रयोग किया। प्रधान पद के लिए डॉक्टर दीप्सी खापरा और डॉक्टर कोमल के बीच सीधा मुकाबला रहा। मतदान के दौरान निर्वाचन प्रक्रिया पूरी तरह शांतिपूर्ण रही तथा सभी व्यवस्थाएं सुव्यवस्थित ढंग से संचालित की गईं। पीठासीन अधिकारी डॉक्टर अंकुर ने बताया कि मतदान निष्पक्ष, पारदर्शी और शांतिपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। चुनाव में पड़े मतों की गणना रविवार को जींद में की जाएगी। जिसके बाद परिणाम घोषित किए जाएंगे। इस दौरान डॉक्टर जयभगवान, डॉक्टर जितेंद्र, डॉक्टर जयप्रकाश, डॉक्टर निहारिका, डॉक्टर अपेक्षा सहित अन्य एक्सटेंशन लेक्चरर उपस्थित रहे।

झज्जर। पौधे वितरित करने के दौरान मौजूद विद्यार्थी व निदेशक धर्मेंद जून।

कैंब्रिज विद्यालय में विद्यार्थियों को बांटे 400 पौधे

झज्जर। कैंब्रिज इंटरनेशनल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय भदाना में पर्यावरण संरक्षण एवं हरित भविष्य के निर्माण के उद्देश्य से लगभग 400 पौधों का वितरण किया गया। विद्यालय द्वारा आयोजित एक छात्र-एक पौधा अभियान केअंतर्गत विद्यार्थियों को फलदार, छायादार एवं औषधीय पौधे प्रदान किए गए। विद्यालय के निदेशक धर्मेंद्र जून ने कहा कि पेड़-पौधे पृथ्वी का अमूल्य धन हैं और प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है कि वह अधिक से अधिक पौधे लगाए तथा उनकी नियमित देखभाल करे। विद्यालय द्वारा विद्यार्थियों को आम, अमरूद, नीम, शीशम, कटहल, जामुन, आंवला, अर्जुन, बेल, पीपल, बरगद, अशोक, सहजन, तुलसी, कड़ी पत्ता, गुलमोहर, कचनार, अमलतास, करंज सहित अनेक प्रकार के फलदार, छायादार एवं औषधीय पौधों का वितरण किया गया। विद्यार्थियों ने पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लेते हुए अधिक से अधिक पौधे लगाने, उन्हें वृक्ष बनने तक सुरक्षित रखने तथा प्रकृति के संरक्षण में अपनी सक्रिय भागीदारी निभाने का संकल्प लिया।

हरिभूमि रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक,रविवार 19 जुलाई 2026

एक समय तक रोजमर्रा की आपा-धापी, दुख और तनाव को दूर करने के लिए लाफ्टर क्लब्स को कारगर माना जाता था। लेकिन हाल के वर्षों में दुख-अवसाद से राहत दिलाने में क्रायिंग क्लब को ज्यादा कारगर माना जाने लगा है। इसीलिए विदेशों में ही नहीं अपने देश में भी इसका ट्रेंड बढ़ रहा है। ये क्रायिंग क्लब कैसे दुखों से राहत दिलाते हैं, यहां बता रहे हैं विस्तार से।

क्रायिंग क्लबों का बढ़ता ट्रेंड
मिलकर रोने से-दुःख हो जाए कम

{ कवर स्टोरी / शाहिद ए. चौधरी }

एक दिन सुबह चहलकदमी करने के दौरान मैंने पार्क के एक कोने में कुछ बुजुर्गों को एक सुर में जोर-जोर से हंसते हुए देखा। अपने-अपने दुःखों को दूर करने, डिप्रेशन से बचे रहने और अपने स्वास्थ्य को बेहतर बनाने का उनका यह तरीका है। बीते कई वर्षों से दुनिया भर में हंसी को सबसे अच्छी दवा मानकर उसे अपनाने का ट्रेंड काफी पॉपुलर हो चुका है। यह देखकर अच्छा लगा। लेकिन संयोग रहा कि जब पार्क से घर लौटा तो दुःखद समाचार मिला कि पड़ोस में रहने वाले एक व्यक्ति की दिल का दौरा पड़ने से डेथ हो गई। मैं शोक व्यक्त करने के लिए उनके घर पहुंचा तो देखा कि गुमसुम बैठी मृतक की पत्नी को अनेक महिलाएं रुलाने का प्रयास कर रही हैं और उनमें से एक को मैंने यह कहते हुए सुना, 'अरे, इन्हें रुला दो, कुछ तो गम गलत होगा, वर्ना सदमे की वजह से डिप्रेशन में चली जाएंगी।' इन दोनों घटनाओं से मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि मनुष्य के लिए हंसने और रोने दोनों का बहुत अधिक महत्व है। वैसे भी कुदरत ने ये दोनों गुण इंसानों को ही दिए हैं। चोट लगने पर जानवर चिल्लाते अवश्य हैं, लेकिन इंसानों की तरह रोते नहीं हैं।

रोने के लिए बन रहे क्लब

आमतौर पर रोने को कमजोरी की निशानी मान लिया जाता है। शायद तभी सुदर्शन फाकिर ने अपने एक शेर में कहा है, 'आप कहते थे कि रोने से न बदलेंगे नसीब/उम्र भर आपकी इस बात ने रोने न दिया।' यह कहा भी भले ही जाता हो कि मर्द को दर्द नहीं होता या मर्द रोते नहीं हैं। लेकिन आज दुनिया भर के डॉक्टर्स इस बात को स्वीकार करते हैं कि रोने से मन हल्का होता है और कुछ लोगों के साथ मिलकर रोने से दुःख से राहत महसूस होती है। इसलिए देश के कई शहरों में क्रायिंग क्लब खुल रहे हैं। देश-समाज का यह नवीनतम सामूहिक संस्कार है, जिसमें हंसी की जगह आंसुओं ने ले ली है। इनमें व्यक्ति उस समय तक रो सकता है, जब तक उसके दिल का बोझ हल्का न हो जाए और वह जिंदगी की नई शुरुआत करने के लिए तैयार न हो जाए।

काफी लोग हो रहे शामिल

क्रायिंग क्लब, दशकों पुराने लाफ्टर क्लबों का जवाब-सा प्रतीत हो रहे हैं। मुंबई, दिल्ली, बैंग्लुरु और हैदराबाद में लोग कॉफी शॉप्स, पब्स में आयोजित होने वाले क्रायिंग सेशन में शामिल हो रहे हैं। सूरत में तो 'हेल्दी क्रायिंग क्लब' को चलते हुए अब आठ वर्ष हो गए हैं, जिसके सदस्य हर माह के अंतिम रविवार को एकत्र होते हैं और जी भरकर रोते हैं।

ऐसे हुई क्रायिंग क्लब की शुरुआत

सबसे पहले टोक्यो (जापान) के हिरोकी तेराई ने ग्रुप थेरेपी के तौर पर वर्ष 2013 में रुइ कत्सू (आंसू बहाना) आरंभ किया। पहले तेराई, तलाक समारोह आयोजित करने के लिए विख्यात थे, जिसमें पूर्व जोड़े अपनी शादी की अंगूठी पर हथोड़े मारते थे ताकि अपने अतीत के बोझ से मुक्त हो सकें। तेराई ने बाद में आक्रामकता को खत्म करते हुए इसका एक कोमल रूप विकसित किया, जिसमें हल्की रोशनी में भावनात्मक फिल्में देखी जाती हैं। आपसी सहमति से एक-दूसरे को खाना खिलाते हैं और क्रायिंग सेशन में लोग हिस्सा लेते हैं। अपने देश में 'स्मॉल वर्ल्ड' (डिजिटल से इतर रियल सोशल कनेक्शन को प्रमोट करने वाली संस्था) के संस्थापक सौरव आर्य ने क्रायिंग क्लब लांच किया। इसे शुरू करने के पीछे उनका तर्क यह था कि 'ऑनलाइन दोस्तों से घिरे रहने के बावजूद लोग अकेलापन महसूस कर रहे हैं।' इस क्लब के सत्र प्राइवेट कैफे व पब्स में आयोजित किए जाते हैं, जिनमें दोस्त के लिविंग रूम जैसा एहसास होता है। सेशन में सभी को बोलना जरूरी नहीं होता। बहुत से लोग दूसरों को सिर्फ सुनते हैं। सुनते हुए ही उसके दर्द को सुनकर या अपना दर्द यादकर वे रोने लगते हैं। सत्र में पुरुष और महिलाएं सभी भाग लेते हैं। आमतौर पर इसमें 20-40 वर्ष के लोग आते हैं।

रोने की विभिन्न वजहें

अमेरिका में रहने वाले 45 वर्षीय रमेश, मुंबई लौटे थे। वह ग्रुप एक्टिविटी की तलाश करते हुए एक ऐसी जगह पहुंच गए, जिसकी उन्हें उम्मीद भी न थी। एक क्रायिंग क्लब, जिसका आयोजन मुंबई के एक बार में हो रहा था, जो उन्हें दिलचस्प लगा, विशेषकर इसलिए कि उन्हें भी अपनी कुछ भावनाओं से मुक्ति पानी थी। रमेश को वह जगह नकारात्मक भावना दूर करने से अधिक संपर्क स्थापित करने वाली अधिक लगी, क्योंकि उनकी वहां ऐसे लोगों से बॉन्डिंग बनी, जो अपनी नकारात्मक भावनाओं से जूझ रहे थे। सच यही है कि ऐसे क्लबों में आने वाले लोगों के रोने के विविध कारण हो सकते हैं- ब्रेकअप, जीवन में अनपेक्षित परिवर्तन या नुकसान। अनाम थकान जिसे शब्दों में व्यक्त न किया जा सके। एक लड़की तो रोने के लिए केवल इसलिए क्रायिंग क्लब में पहुंची कि उसने पांच दिन से किसी से बात ही नहीं की थी। उसे अपने गुमनाम होने का एहसास हो रहा था। उसने सत्र में दो नए दोस्त बनाए। सत्र में शामिल होने की एक व्यक्ति ने यह वजह बताई, 'मुझे राहत नहीं चाहिए। मुझे तो बस वह जगह चाहिए, जहां मेरी उदासी को बरकरार रहने का अवसर मिले।'

सच यह है कि अलग-अलग स्थानों और परिवेश के लोग अलग-अलग तरह से रोते हैं। महानगरों में लोग बर्नआउट और अकेलेपन की वजह से रोते हैं। छोटे शहरों में रहने वाले लोग अकसर पारिवारिक या सामाजिक दबाव के कारण रोते हैं। ऐसे क्लबों में एक बार जब रोना बंद हो जाता है, तो आपसी समानुभूति का संपर्क स्थापित होना शुरू हो जाता है। लोग नए संपर्क और मुस्कान लेकर लौटते हैं। *

लाफ्टर मैन से बने क्रायिंग मैन

लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स ने कमलेश मसाला वाला को 'पहला लाफ्टर टीचर' घोषित किया था। तकरीबन आठ साल पहले उन्होंने तय किया कि लोगों को 25 साल तक बहुत हंसा लिया, अब उन्हें रुलाया जाए और उन्होंने 'हेल्दी क्रायिंग क्लब' की स्थापना सबसे पहले गुजरात के सूरत में की। गौरतलब है कि 2008 में मसाला वाला ने इंटरनेशनल लाफ्टर योग कांफ्रेंस के दौरान अविरल रोने की प्रतियोगिता जीती थी। उन्होंने अपनी दिवंगत माता को याद करके एकदम से रोना शुरू कर दिया था। बाद में उन्हें एहसास हुआ कि भावनात्मक आंसुओं में भी मेडिकल लाभ होते हैं। अब तो कई स्टडीज में सामने आया है कि जब हम दुःख, तनाव या कुंठा की वजह से रोते हैं तो हमारा शरीर कोर्टिसोल स्ट्रेस हॉर्मोन उत्पन्न करता है। हंसने से जो आंसू निकलते हैं, उनमें यह हार्मोन नहीं होता है। यानी सुकून महसूस करने के लिए हंसी के साथ आंसू भी जरूरी हैं।

भूटान, ग्लोबल कंपैशन डिक्लेरेशन (जीसीडी) पर हस्ताक्षर करने वाला पहला देश बना है। क्या है यह डिक्लेरेशन और किस तरह समाज की चुनौतियों से निपटने में यह सहायक हो सकता है? इसके साथ ही कुछ ज्वलंत सवालों पर नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यार्थी ने साझा किए अपने विचार।

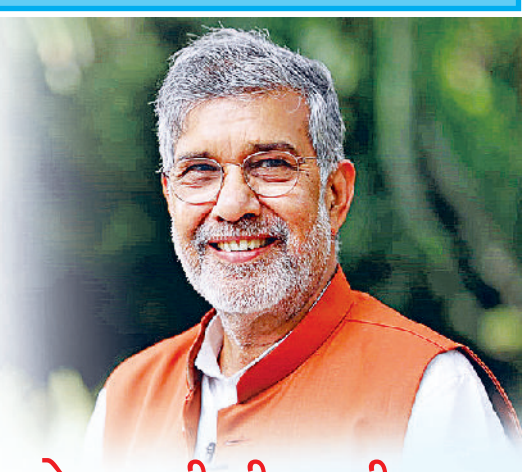

दूसरे की तकलीफ को अपनी पीड़ा की तरह महसूस करने से जन्मती है करुणा की शक्ति

{ विशिष्ट अभिव्यक्ति/ कैलाश सत्यार्थी }

हाल ही में हमारे पड़ोसी देश भूटान ने ग्लोबल कंपैशन डिक्लेरेशन (जीसीडी) पर हस्ताक्षर किया है। ग्लोबल कंपैशन डिक्लेरेशन, एक महत्वपूर्ण, अनूठा दस्तावेज है। पिछले साल सितंबर में संयुक्त राष्ट्र संघ के महाधिवेशन में सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कंपैशन ने मोनाको देश की सहभागिता में एक विशेष बैठक आयोजित किया, जो करुणा के वैश्वीकरण से शासन तंत्र को करुणामय बनाने के विचार से आयोजित किया गया था। उस उच्च स्तरीय बैठक में राष्ट्राध्यक्ष, संयुक्त राष्ट्र संघ के वरिष्ठ अधिकारी, नोबेल पुरस्कार विजेता और मानवाधिकार कार्यकर्ता शामिल हुए थे। इसमें संवाद के बाद जो सहमति बनी, वह एक घोषणापत्र के रूप में सामने आई, जिसमें सबसे बड़ी बात यह थी कि उन्होंने करुणा की हमारी बदली परिभाषा को स्वीकार किया। सामान्य तौर पर करुणा को एक नाजुक भाव मान लिया जाता है। हमारी परिभाषा में करुणा वह शक्ति है, जो दूसरे की तकलीफ को अपनी पीड़ा की तरह महसूस करने से जन्मती है और उसके समाधान की प्रेरणा शक्ति बनती है। इसी के आधार पर समाज के हर क्षेत्र में विवेकपूर्ण समाधान की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए यह घोषणापत्र तैयार हुआ। भूटान पहला देश है, जिसने इसे अनुमोदित किया और वहां के प्रधानमंत्री ने इस पर हस्ताक्षर किया। बाद में एक अन्य छोटे से देश तिमोर लेस्ते ने भी हस्ताक्षर किया।

विकसित करना होगा करुणामय नेतृत्व: आज जब समाधानकर्ताओं और पीड़ितों के बीच खाई चौड़ी होती चली जा रही है, तब यह आवश्यक है कि शासन व्यवस्था, शिक्षा, चिकित्सा, न्याय, मीडिया आदि में करुणामय नेतृत्व विकसित किया जाए। इसका अर्थ यह हुआ कि इन सभी संस्थाओं या क्षेत्रों में लोग दूसरे की समस्याओं को अपना समझकर उसके निपटान के लिए नेतृत्व करें। यह काम लगातार व्यावहारिक प्रशिक्षण संवाद और अनुभवजनित ज्ञान जैसे प्रयोगों से संभव है। ऐसे कुछ वैज्ञानिक शोध हुए हैं, जिनसे साबित हुआ है कि अस्पतालों में चिकित्साकर्मियों के करुणाजनित व्यवहार के परिणामस्वरूप मरीजों का जल्दी और प्रभावशाली उपचार हो सका। इसी तरह कॉरपोरेट जगत में करुणामय नेतृत्व के कारण प्रबंधन में परस्पर विश्वास और सक्रिय भागीदारी, कर्मचारियों में संतोष, उत्साह और कंपनियों में उत्पादन-मुनाफा बढ़ गया।

युद्ध का खामियाजा भुगतते हैं बच्चे: यह पूरी मानवता के लिए बेहद चिंताजनक तथ्य है कि आज दुनिया में लगभग 47 करोड़ बच्चे युद्धग्रस्त क्षेत्रों में रहने को विवश हैं। हम सबको यह समझना जरूरी है कि इतिहास में बच्चे कभी युद्ध का कारण नहीं रहे। न ही कभी वे युद्ध लड़ते हैं। परंतु युद्ध का सबसे ज्यादा खामियाजा उन्हीं को भुगतना पड़ता है। परिवार से बिछड़ना, पढ़ाई छूट जाना, मनोवैज्ञानिक और मानसिक आघात जैसे स्थाई घाव उनके पूरे जीवन को प्रभावित करते हैं। दुर्भाग्य है कि वे हमारी राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय प्राथमिकता नहीं हैं। यदि वैश्विक नेताओं, नेतृत्वकर्ताओं ने अपनी जिम्मेदारी को ठीक से समझा होता तो दुनिया भर में इतने बच्चे असमय मौत के मुंह में न समाते।

आवश्यक है करुणामय शिक्षा प्रणाली: जब तक शिक्षा का उद्देश्य खुद की और देशों की आर्थिक तरक्की मात्र रहेगा, तब तक नागरिक स्वार्थी और आत्मकेंद्रित बनते रहेंगे। इसलिए जरूरी है कि पाठ्यक्रम और शिक्षा नीतियों के माध्यम से बच्चों में एक-दूसरे के प्रति नैतिक जवाबदेही का भाव सिखाया जाए, जिसे हम करुणामय शिक्षा प्रणाली कहते हैं।

तभी होगा वैश्विक चुनौतियों का समाधान: आज दुनिया के सामने मौजूद प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैसी तमाम वैश्विक चुनौतियों के लिए कई कारण जिम्मेदार हैं। सबसे बड़ा कारण कथनी और करनी का अंतर है। उपभोक्तावाद, औद्योगीकरण और मुनाफा पर आधारित जीवनशैली, पृथ्वी और पर्यावरण के विनाश का बड़ा कारण है। दूसरा कारण, इस दिशा में राजनैतिक इच्छा शक्ति का अभाव है। तीसरा, पर्यावरण विनाश और संरक्षण एकदेशीय नहीं हो सकता। यह धरती पर रहने वाले सभी लोगों को प्रभावित करता है। कम आबादी वाले अमीर देश, ज्यादा आबादी वाले गरीब देशों से कहीं अधिक कार्बन उत्सर्जन करते हैं। इसलिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जवाबदेही तय होनी चाहिए।

पर्यावरण संरक्षण के लिए मिसाल है भूटान: भूटान ने ऐसे कई प्रयोग किए हैं, जो पर्यावरण, मानवता और संस्कृति की रक्षा के लिए जाने जाते हैं। इसमें ग्रॉस हैप्पीनेस इंडेक्स भी शामिल है। खुशी के इस पैमाने को दूसरे कई देश भी मानते हैं। साथ ही भूटान के संविधान में यह प्रावधान है कि देश का सत्तर प्रतिशत जमीन वन क्षेत्र रहेगा, जिससे जैव विविधता और पर्यावरणीय संतुलन बना रहे। वहां के महाराज, जिग्मे खेसर नामग्येल वांगचुक और राजकुमारी सोनम जी सहित राजपरिवार, देश के मुख्य न्यायाधीश और अनेक राजनेताओं के साथ करुणामय समाज बनाने पर ठोस सहमति बनी, जिसे हम मिलकर लागू करने का समयबद्ध कार्यक्रम बना रहे हैं। *

प्रस्तुति: सरस्वती रमेश

{ लघुकथाएं }

यादों का बैंक

शहर में एक नया बैंक खुला-यादों का बैंक। यहां लोग पैसे नहीं, अपनी यादें जमा करते थे। खुशियों की यादों पर अच्छा ब्याज मिलता था, जबकि दुखद यादें हटाने के लिए लोग फीस देते थे।

एक दिन पचपन वर्षीय अजित वहां पहुंचा। उसने अपनी सबसे प्रिय याद जमा करने का फॉर्म भरा। कर्मचारी ने पूछा, 'कौन-सी याद है?'

अजित मुस्कुराया, 'वह दिन, जब मेरा पांच साल का बेटा पहली बार साइकिल चलाते हुए गिर पड़ा था। रोते-रोते फिर उठा और बोला-पापा, मैं हारूंगा नहीं।'

बैंक कर्मचारी चौंका, 'इतनी प्यारी याद क्यों जमा करना चाहते हैं? इस पर तो आपको अच्छा लाभ मिलेगा।'

अजित ने धीमे स्वर में कहा, 'इसलिए क्योंकि मेरा बेटा अब इस दुनिया में नहीं है। उसकी याद हर दिन मुझे रुलाती है।'

याद बैंक की मशीन ने अजीत की उस स्मृति को उसके मन से निकाल कर जमा कर लिया। अजित हल्का महसूस करने लगा।

कुछ महीने बाद वह फिर बैंक पहुंचा। इस बार उसके चेहरे पर बेचैनी थी, 'मुझे अपनी जमा की हुई याद वापस चाहिए।' उसने बैंक कर्मी से कहा।

'लेकिन क्यों? आपने तो दर्द से छुटकारा पाने के लिए उसे जमा किया था!' अजित की आंखें भर आईं। वह बोला, 'दर्द चला गया, पर उसके साथ मेरा बेटा भी चला गया। अब मैं रोता नहीं, लेकिन मुस्कुरा भी नहीं पाता। समझ में आया कि कुछ दुख बोझ नहीं होते, वे हमारे अपनों के आखिरी निशान होते हैं।'

बैंक कर्मी ने उसकी याद लौटा दी। बैंक से बाहर निकलते समय अजित की आंखों में आंसू थे, पर होंठों पर मुस्कान भी। उसे पहली बार लगा कि हर घाव भर जाना जरूरी नहीं, कुछ घाव ही हमें इंसान बनाए रखते हैं। *

-कृति आरके जैन

श्रम का संगीत

पत्नी खर्राटे ले रही थी। पति की नींद खर्राटे की आवाज से टूट गई थी।

यह पहली ही बार था, जब पति को पत्नी के खर्राटे सुनने का अवसर मिला था। रोज तो पत्नी ही पति के खर्राटे की वजह से नींद टूटने की शिकायत किया करती थी, आज पति को यह मौका मिल गया था!

बस सुबह होने की प्रतीक्षा थी।

पति फिर से सोने की कोशिश करने लगा। आंखें मूंदते ही पत्नी की दिनचर्या उसकी आंखों के आगे आ गई, सुबह-सुबह उठना, बच्चों को तैयार करना, नाश्ता कराना, स्कूल बस तक छोड़ना। आकर पति को जगाना, चाय पिलाना। नाश्ते और लंच की तैयारी में लग जाना। पति के कपड़े निकालकर रखना। उनको नाश्ता कराना। उनका लंच पैक करना। पति के जाने के बाद घर की साफ-सफाई और गंदे कपड़ों को वॉशिंग मशीन में डालना। नहाना-धोना, पूजा-पाठ, नाश्ता करना। बच्चों को स्कूल से लाना। खिलाना-पिलाना, उनको होमवर्क करवाना। शाम में बच्चों को पार्क ले जाना। फिर साग-सब्जी, दूध, फल और जरूरी सामानों की खरीदारी करना। सबके लिए रात का खाना पकाना। पति के आने पर उन्हें चाय-पानी देना। बच्चों को खिलाकर पति के साथ खाने बैठना। थोड़ी देर टीवी पर कोई सीरियल देखना और फिर सो जाना।

'यह खर्राटा तो श्रम का संगीत है!' पता नहीं कहां से पति के मन में यह साहित्यिक भाव आया?

पत्नी के खर्राटे अब उसे संगीतमय लगने लगे। खर्राटों से उसे अब कोई शिकायत नहीं रही। *

- संजीव ठाकुर

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

संवेदना से भरी कहानियां

चार दशक से अधिक समय से कहानी लेखन में सक्रिय वरिष्ठ लेखक गोविंद सेन की चयनित कहानियों का संकलन कुछ समय पूर्व प्रकाशित होकर आया है। इसमें उनकी अठारह कहानियां संकलित हैं।

ये कहानियां जीवन की विडंबनाओं और रिश्तों की पेचीदगियों को उजागर करने के साथ ही हमारी संवेदनाओं को झकझोरती भी हैं। मिसाल के तौर पर 'स्पीड ब्रेकर' कहानी मानवीय मनोवृत्ति को सामने लाती है, जिसमें पढ़े-लिखे व्यक्ति के मन में सहज तौर पर हीनभावना जन्म लेती है, जब उसे अपने से कम शिक्षित व्यक्ति, आर्थिक रूप से अधिक संपन्न दिखता है।

गरीब तबके के लोगों का जीवन, किस तरह छोटी-छोटी चीजों से भी वंचित रहने का दंश सहता रहता है, इसका मार्मिक वर्णन 'गुमशुदा चांद की वापसी' में किया गया है। संग्रह की एक छोटी सी कहानी 'दाढ़ी' में बहुत सरलता से सामाजिक विषमता की दुखती रग पर अंगुली रखी गई है।

संग्रह की लगभग सभी कहानियां पठनीयता से भरपूर हैं। इन कहानियों में न तो किसी वाद का झंडा उठाया गया है, न ही किसी विमर्श को लेकर हाय-तौबा की गई है। जानबूझ कर गढ़े गए शिल्प और भाषायी कलाबाजियों से मुक्त ये कहानियां बहुत सरल और सहज तरीके से हमारे मन के किसी कोने में हमेशा के लिए दर्ज होने में सक्षम हैं। *

किताब: चयनित कहानियां (कहानी-संग्रह), **लेखक:** गोविंद सेन, **मूल्य:** 225 रुपए, **प्रकाशक:** न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन, नई दिल्ली

लोक-संस्कृति / शिखर चंद जैन

दुनिया के अनेक देशों की संस्कृतियों में बादल और बारिश को उम्मीद, समृद्धि और जीवन का संदेशवाहक माना जाता है। इसी खुशी को अलग-अलग देशों में अनूठे उत्सवों, लोक-परंपराओं, प्रार्थनाओं, नृत्य और सामुदायिक अनुष्ठानों के जरिए उत्साहपूर्वक मनाया जाता है। वर्षा ऋतु से जुड़े ऐसे ही कुछ उत्सवों पर एक नजर।

दुनिया भर में मनाते हैं रंग-बिरंगे वर्षा उत्सव

वर्षा प्रार्थना महोत्सव, वियतनाम

मार्च के शुष्क मौसम में वियतनाम के हा जियांग प्रांत में लो लो समुदाय के लोग पारंपरिक नृत्य और प्रार्थना के माध्यम से बादलों से पानी बरसाने की गुहार लगाते हैं। इसमें तांबे के प्राचीन ड्रम बजाना और पुजारी (शमन) द्वारा प्राकृतिक शक्तियों को प्रसन्न करने वाले मंत्रोच्चार शामिल होते हैं, जिसके बाद सामूहिक भोज का आयोजन होता है। वियतनाम का एक अन्य श्वेत थाई अल्पसंख्यक समुदाय जेन, बारिश के आगमन पर फोन महोत्सव मनाता है। यह उत्सव उत्तर-पश्चिमी वियतनाम की माई चाऊ की खूबसूरत घाटी में होता है। इस उत्सव में गांव के लोग पारंपरिक वाद्ययंत्र बजाते हैं, सामूहिक रूप में लोक गीत गाते हैं और अच्छी बारिश की कामना के लिए अनुष्ठान करते हैं। वियतनाम में रहने वाले जराई समुदाय के लोग प्ली ओई नामक वर्षा प्रार्थना उत्सव, किसी राष्ट्रीय ऐतिहासिक-सांस्कृतिक स्थल पर सामूहिक तौर पर मनाते हैं। यह आयुन हा कम्यून और जिया लाई प्रांत में मनाया जाता है। *

मकाहिकी उत्सव, अमेरिका

अमेरिका के हवाई द्वीप में मनाया जाने वाला मकाहिकी उत्सव वर्षा ऋतु, उर्वरता और शांति के देवता 'लोनो' को समर्पित है। चार महीनों तक चलने वाले इस पारंपरिक लोक उत्सव में कृषि कार्यों को रोककर दावतें, संगीत और पारंपरिक नृत्य किए जाते हैं। भरपूर वर्षा और उससे उपजी फसल के लिए देवता को धन्यवाद दिया जाता है। इस उत्सव के दौरान किसी भी तरह का विवाद, झगड़ा करना वर्जित होता है। सभी मिलकर प्रेम और सौहार्द के साथ सामूहिक तौर पर पहली बारिश का जश्न मनाते हैं। *

लोंगटैटो महोत्सव, चीन

चीन में मनाए जाने वाले पारंपरिक त्योहार लोंगटैटो में लोग बारिश के देवता माने जाने वाले 'ड्रैगन' के प्रति अपनी आदरांजलि अर्पित करते हैं, ताकि वे प्रसन्न रहें और उनकी कृपा से पूरे वर्ष कृषि के लिए अच्छी वर्षा होती रहे। 'लोंगटैटो' का शाब्दिक अर्थ 'अजगर (ड्रैगन) का अपना सिर उठाना' होता है। प्राचीन काल में चीन के निवासियों का मानना था कि इस दिन के बाद बारिश बढ़ जाती है, क्योंकि बारिश लाने वाला ड्रैगन राजा अपनी सर्दियों की नींद से जाग जाता है। इस त्योहार की सबसे प्रसिद्ध परंपरा इस दिन बाल कटवाना है। चीनी लोगों का मानना है कि इस दिन नाई के पास जाने या बाल कटवाने से दुर्भाग्य दूर होता है और पूरे साल अच्छी किस्मत बनी रहती है। इस दिन लोग 'ड्रैगन' नाम से जुड़े या ड्रैगन के अंगों का प्रतीक माने जाने वाले व्यंजन खाते हैं, जैसे- ड्रैगन की मूंछों वाले नूडल्स (लॉन्गक्सू नूडल्स) और पकौड़ी, ताकि अच्छी फसल और मौसम के लिए अपने भोजन के जरिए भी प्रार्थना की जा सके। *

बरशा बंदोना, बांग्लादेश

हमारे पड़ोसी देश बांग्लादेश में आषाढ़ महीने के पहले दिन मनाए जाने वाले इस उत्सव बरशा बंदोना में संगीत, कविता पाठ और साल की पहली बारिश में स्नान करने की अनूठी परंपरा है। इस उत्सव में ग्रामीण महिलाएं आसमानी नीले रंग की साड़ियां पहनकर बादलों का स्वागत करती हैं। वर्षा का आह्वान करती हैं। *

हरियाली तीज पर झूला झूलती महिलाएं

प्रकृति से जुड़ाव का पर्व साओ जोआओ

भारत में मनाए जाने वाले वर्षा उत्सव

अपने देश भारत के अलग-अलग भागों में भी बारिश के आगमन पर, इसके स्वागत के लिए कई पारंपरिक उत्सव मनाए जाते हैं।

हरियाली तीजः राजस्थान समेत उत्तर भारत के कई राज्यों के ग्रामीण और आंचलिक क्षेत्रों में वर्षा ऋतु के आगमन पर प्रकृति की हरियाली और बादलों का स्वागत करने के लिए हरियाली तीज पर्व मनाते हैं। इस पर्व से धार्मिक आस्था भी जुड़ी हुई है। महिलाएं भगवान शिव और माता पार्वती की पूजा करती हैं और व्रत रखती हैं। इसके अलावा आपसी समुदाय और आस-पड़ोस की महिलाएं किसी बाग-बगीचे में सामूहिक तौर पर झूला झूलती हैं और पारंपरिक लोकगीत गाती हैं।

साओ जोआओः मानसून की शुरुआत में गोवा में मनाया जाने वाला अनोखा त्योहार है, साओ जोआओ। इस पर्व में युवा मानसूनी बारिश के पानी से भरे कुओं और तालाबों में कूदकर प्रकृति के इस उपहार का जश्न मनाते हैं। इस उत्सव पर लोग सिर पर फलों के मुकुट भी पहनते हैं। इस तरह यह पर्व प्रकृति से हमारे जुड़ाव और उस पर निर्भरता को प्रकट करता है।

सापुतारा मानसून महोत्सवः गुजरात राज्य में मनाया जाने वाला सापुतारा मानसून महोत्सव, भारत के चुनिंदा उत्सवों में से है जो विशेष रूप से आसमान में तैरते बादलों, धुंध और बारिश के मनोरम मौसम को समर्पित है। इस पर्व से भी स्थानीय लोक संस्कृति की कई परंपराएं जुड़ी हुई हैं।

लक्ष्य निर्धारण से मिलेगी करियर में निश्चित सफलता

बदलते दौर में किसी करियर में सफल होने के लिए केवल मेहनत नहीं, बल्कि निश्चित लक्ष्य और सही दिशा का होना भी जरूरी है। स्पष्ट लक्ष्य व्यक्ति को अवसर पहचानने, बेहतर निर्णय लेने और निरंतर सीखते रहने की प्रेरणा देते हैं। अपना लक्ष्य कैसे निर्धारित करें, किस तरह उसे प्राप्त करें, बहुत उपयोगी सलाह।

सेल्फ इंप्रूवमेंट

नरेंद्र कुमार

मशहूर करियर काउंसलर रिचर्ड एन. बोलस ने अपनी किताब 'व्हाट कलर इज योर पैराशूट' में लिखा है, 'करियर में ऊंची उड़ान भरनी है तो पहले अपनी मंजिल तय करें।' तकनीक, एआई, ऑटोमेशन और बदलते रोजगार बाजार ने करियर की दुनिया को पूरी तरह से बदल दिया है। आज सफलता केवल कड़ी मेहनत से नहीं मिलती बल्कि उस सही दिशा से मिलती है, जिसे लक्ष्य निर्धारण या गोल सेटिंग कहा जाता है।

लक्ष्य देता है स्पष्ट दिशाः मानव मस्तिष्क तब सबसे प्रभावी ढंग से काम करता है, जब उसे स्पष्ट उद्देश्य हासिल होता है। मनोविज्ञान बताता है कि लक्ष्य हमारे ध्यान, ऊर्जा और निर्णयों को एक दिशा में केंद्रित करते हैं। बिना लक्ष्य के व्यक्ति अनेक काम करता है, लेकिन उसकी ऊर्जा बिखर जाती है। जबकि स्पष्ट लक्ष्य उसे बताते हैं कि कौन-सा काम महत्वपूर्ण है और कौन-सा बिना किए भी चल जाएगा। यही कारण है कि उद्यमी, वैज्ञानिक, खिलाड़ी और प्रशासक अपने बड़े उद्देश्यों को छोटे-छोटे लक्ष्यों में बांटकर काम करते हैं।

गोल सेटिंग से बढ़ती उत्पादकताः स्पष्ट लक्ष्य व्यक्ति को समय का महत्व समझाता है। जब किसी व्यक्ति के पास निर्धारित लक्ष्य होता है, तो वह लगातार सीखने के लिए प्रेरित होता है। मसलन यदि किसी का उद्देश्य साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ बनना है तो नेटवर्किंग, क्लाउड सिक्योरिटी, एथिकल हैकिंग और एआई आधारित सुरक्षा प्रणालियों का लगातार अध्ययन करता है। वास्तव में यही सीखने की प्रवृत्ति भविष्य में उसकी बड़ी ताकत बनती है।

निर्णय लेना सीखिएः करियर में हर दिन छोटे-बड़े निर्णय लेने होते हैं- नई नौकरी स्वीकारें या नहीं, कौन-सा कोर्स करें, किस तकनीक को सीखें, किस अवसर को छोड़ दें? ये ऐसी बातें हैं जो हर उस व्यक्ति के सामने आती ही आती हैं, जो अभी अपने करियर में आगे बढ़ने की दिशा में होता है। ऐसे में यदि आपका लक्ष्य स्पष्ट है तो निर्णय लेना सरल हो जाता है, क्योंकि हर विकल्प को उसी कसौटी पर परखा जाता है कि वह हमें हमारे उद्देश्य के कितना निकट ले जाएगा।

छोटे-छोटे लक्ष्य प्राप्त करें: जब व्यक्ति छोटे लक्ष्य पूरा करता है तो उसका अपनी क्षमता पर भरोसा बढ़ने लगता है। वास्तव में यही आत्मविश्वास उसे बड़े लक्ष्य को हासिल करने के लिए प्रेरित करता है और यही आत्मविश्वास बड़े लक्ष्य को हासिल करने के लिए उसका आधार बनता है। करियर की लंबी यात्रा में यह मानसिक ताकत बेहद जरूरी होती है।

बदलें अपनी रणनीतिः जिन लोगों के पास कोई स्पष्ट लक्ष्य नहीं होता, वे एक समय के बाद ठहर जाते हैं। कोई परियोजना अपेक्षित परिणाम नहीं देती है। ऐसे में वे बार-बार असफल होने लगते हैं। लेकिन जिनके पास अपने लक्ष्य की स्पष्ट दिशा होती है, वे इन बातों से परेशान नहीं होते। वे अपनी रणनीति बदलते हैं, सीखते हैं और फिर आगे बढ़ जाते हैं।

मजबूत नेटवर्क बनाएं: जब व्यक्ति के करियर का अपना लक्ष्य तय होता है, तो वह अपने तय लक्ष्य के वरिष्ठों और विशेषज्ञों के साथ नेटवर्किंग मजबूत करता है, क्योंकि उसे पता होता है कि आज नहीं तो कल उसे इन्हीं के साथ काम करना है। यह नेटवर्क इसके लिए बहुत काम का साबित होता है। *

ऐसे डिसाइड करें टार्गेट

कुछ करियर काउंसलर लक्ष्य तय करने के मामले में एक स्मार्ट मॉडल अपनाने की सलाह देते हैं। उनके अनुसार ऐसे लक्ष्य बनाएं, जो बिल्कुल स्पष्ट हों, जिसे हासिल किया जा सके, यानी जो आपकी क्षमताओं के अनुकूल हों। लक्ष्य ऐसा हो, जो वर्तमान समय में प्रासंगिक करियर हो, जिस तक एक समयबद्ध रफ्तार से पहुंचा जा सके।

नेचुरल प्लेस / बाल मुकुंद ओझा

स्टेपिंग स्टोंस खूबसूरत रिवर क्रॉसिंग

लंदन, दुनिया के अग्रणी पर्यटन स्थलों में से एक है। यहां अगर तापमान 22 डिग्री सेल्सियस हो तो यह अच्छे मौसम का परिचायक माना जाता है। लंदन प्रवास के दौरान एक दिन ऐसे ही अनुकूल मौसम का फायदा उठाते हुए हमने सपरिवार घूमने का प्रोग्राम बनाया और पहुंच गए बॉक्स हिल की तलहटी पर बहने वाली मोल नदी पर बने मशहूर स्टेपिंग स्टोंस पर।

खूबसूरत वॉकिंग प्लेसः मोल नदी, दक्षिणी इंग्लैंड में टेम्स नदी की एक सहायक नदी है। यह गैटविक एयरपोर्ट के पास वेस्ट ससेक्स में निकलती है और सरे शहर से उत्तर-पश्चिम में 80 किमी. बहकर हैंपटन कोर्ट पैलेस में टेम्स नदी तक पहुंचती है। यह नदी सरे जिले के मोल वैली को अपना नाम देती है। यह खूबसूरत वॉकिंग प्लेस, साउथ लंदन स्थित हमारे घर से लगभग 50 किमी. दूर ही है। स्टेपिंग स्टोंस, सरे काउंटी स्टेट के इस हिस्से में एक मशहूर जगह है और नदी को बहते हुए बिल्कुल करीब से देखने के लिए यह एक परफेक्ट जगह है।

इसे पार करना है रोमांचकः स्टेपिंग स्टोंस, पत्थरों का एक सेट है, जिसे एक काम चलाऊ रास्ता बनाने के लिए लगाया गया है। यह पैदल चलने वालों को एक प्राकृतिक नदी के रास्ते से होकर ले जाता है। ये स्टोन यानी पत्थर विक्टोरियन जमाने से बॉक्स हिल आने वाले पर्यटकों का पसंदीदा स्थल रहे हैं। बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक, पत्थर से पत्थर पर कदम रखते हैं और बिना फिसले संतुलन बनाए रखने की कोशिश करते हैं। ये बैलेंस ब्लॉक, शारीरिक गतिविधि और सक्रिय प्रयास को बढ़ावा देते हैं। विशेषकर बच्चे, किशोर और युवाओं को ये स्टेपिंग स्टोंस, पूरे शरीर के व्यायाम के लिए कूदने, खिंचाव, चढ़ाई और संतुलन बनाने के लिए प्रेरित करते हैं। मैंने भी नदी को इन लगभग 15 स्टेपिंग स्टोंस पर चलकर पार किया। कई बार बैलेंस बिगड़ा मगर तुरंत संभल भी गया। एक बारगी तो ऐसे लगा जैसे इस बार तो गिर ही जाऊंगा, मगर इन स्टेपिंग स्टोंस को आखिर पार कर ही लिया।

दूसरी तरफ हैं शानदार नजारेः एक बार स्टेपिंग स्टोन पार करने के बाद, रास्ता नदी के साथ-साथ चलता है, जहां से पानी और आस-पास की मंत्र मुग्ध कर देने वाली हरियाली के खूबसूरत नजारे दिखते हैं। बॉक्स हिल स्टेपिंग स्टोंस वॉक, सरे हिल्स नेशनल लैंडस्केप में 3.2 किमी. का हाइकिंग रूट है। लगभग 1 घंटे में 477 फीट की चढ़ाई चढ़ लेते हैं। वॉक का यह हिस्सा थोड़ा मुश्किल है, लेकिन बहुत रोमांचक है। *

मर्लिन मुनरो से इंस्पायर रहीं बॉलीवुड की टॉप एक्ट्रेसेस

हॉलीवुड की टॉप एक्ट्रेसेस में शामिल रहीं मर्लिन मुनरों ने दुनिया भर के दर्शकों को ही नहीं, हिंदी सिनेमा की कई फेमस एक्ट्रेसेस को भी इंस्पायर किया। मर्लिन मुनरो की जन्मशती केवल एक एक्ट्रेस को याद करने का अवसर नहीं, बल्कि उस खूबसूरती, ग्लैमर और व्यक्तित्व के प्रभाव को समझने का भी समय है।

ग्लैमर आइकन

डी. जे. नंदन

साल 2026, 20वीं सदी की सबसे मशहूर हॉलीवुड एक्ट्रेस में से एक मर्लिन मुनरो का जन्मशती वर्ष है। मर्लिन मुनरो की जन्मशती केवल हॉलीवुड के लिए खास नहीं है, बॉलीवुड के लिए भी यह विशेष है। क्योंकि बॉलीवुड में भी मर्लिन मुनरो के ग्लैमर ने न केवल अपनी स्थाई छाप छोड़ी है बल्कि आज भी बॉलीवुड के ग्लैमर में मर्लिन मुनरो की साफ-साफ मौजूदगी देखी जा सकती है। हालांकि मर्लिन ने कभी-भी बॉलीवुड की कोई फिल्म नहीं की, लेकिन उनकी छवि, उनका ग्लैमर, उनका फैशन सेंस और कैमरे के सामने उनकी सहज आत्मविश्वास से भरी मौजूदगी ने बॉलीवुड की कई पीढ़ियों को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित किया है।

मधुबाला

जीनत अमान

बॉलीवुड पर प्रभावः वास्तव में 1950 और 1960 के दशक का भारतीय सिनेमा, परिवर्तन के दौर का सिनेमा था। पहले जहां नायिकाएं सादगी और पारंपरिक पहनावों तक सीमित रहती थीं, वहीं धीरे-धीरे आधुनिक परिधान, पश्चिमी फैशन और कहीं ज्यादा आत्मविश्वासी नायिका पर्दे पर दिखाई देने लगीं, जिसमें मर्लिन मुनरो के ग्लैमर का साफ-साफ असर देखा जा सकता है। भारतीय फिल्मों की नायिकाओं ने मर्लिन मुनरो से बहुत कुछ सीखा है और बहुत कुछ उनकी तरह बनने और ढलने की भी कोशिश की है। मर्लिन मुनरो की मुस्कान, कैमरे के सामने संवाद अदा करने का उनका अंदाज, बॉडी लैंग्वेज और फैशन ने भारतीय फिल्मकारों को यह एहसास कराया कि ग्लैमर भी अभिनय की भाषा का हिस्सा हो सकता है।

मर्लिन मुनरो से मधुबाला की तुलनाः बॉलीवुड की जिस नायिका पर सबसे पहला और सबसे ज्यादा मर्लिन मुनरो का असर दिखा, वह मधुबाला थीं। उस दौर में अकसर मधुबाला की तुलना मर्लिन मुनरो से की जाती थी। दोनों ही असाधारण सुंदर थीं, दोनों के पास सहज मुस्कान का जबर्दस्त जादू था और दोनों ही कम उम्र में असमय मृत्यु को प्राप्त हुईं। हिंदी सिनेमा के दर्शक मधुबाला को मर्लिन मुनरो की तरह देखते थे। हालांकि दोनों की अभिनय शैली और फिल्मी यात्रा एक-दूसरे से बिल्कुल अलग थे। फिर भी यह सच है कि दोनों अपने-अपने देशों में सौंदर्य और आकर्षण का स्थाई प्रतीक बन गईं। मधुबाला की लोकप्रियता भारतीय सांस्कृतिक परिवेश में विकसित हुई, जबकि मर्लिन वैश्विक पॉप कल्चर की पहचान बनीं।

दीपिका पादुकोण

करीना कपूर

परवीन बॉबी-जीनत अमान पर प्रभावः परवीन बॉबी की भी तुलना कई संदर्भों में मर्लिन मुनरो से की जाती है। यह स्वाभाविक भी है, क्योंकि अगर पश्चिमी ग्लैमर की सबसे साफ झलक बॉलीवुड की किसी अभिनेत्री में आजतक सबसे ज्यादा दिखी है, तो वह परवीन बॉबी ही थीं। 1970 और 1980 के दशक में उन्होंने भारतीय फिल्मों में आधुनिक, आत्मनिर्भर और फैशनेबल महिला की नई छवि प्रस्तुत की थी। पश्चिमी परिधान, खुले विचार और कैमरे के सामने सहज आत्मविश्वास ने उन्हें उस दौर की सबसे अलग अभिनेत्री बना दिया था। ऐसे ही जीनत अमान ने एक दौर में न सिर्फ बॉलीवुड अभिनेत्रियों की पारंपरिक परिभाषा को बदला था बल्कि वह भी पश्चिमी फैशन, मर्लिन मुनरो की तरह बड़े-बड़े धूप के चश्मे, स्टाइलिश गाउन पहनने और आत्मविश्वास से बॉलीवुड की सिने स्क्रीन को अपनी मौजूदगी से चौंधिया दिया था। हालांकि जीनत अमान या परवीन बॉबी के बारे में यह नहीं कह सकते कि वे सीधे-सीधे मर्लिन मुनरो को कॉपी करती थीं। इन दोनों ग्लैमरस एक्ट्रेसेस ने मुनरो से प्रेरणा तो ली थी, लेकिन उन्होंने अपना ग्लैमर भारतीय संदर्भों में विकसित किया था।

इन एक्ट्रेसेस पर भी दिखा असरः 1980-90 के दशक में श्रीदेवी ने ग्लैमर और अभिनय का वैसा ही संतुलन पेश किया था, जैसा कभी मर्लिन मुनरो ने हॉलीवुड में किया था। श्रीदेवी के अभिनय में उनका गजब का आकर्षण शामिल होकर उन्हें अद्वितीय बनाता था। बाद की पीढ़ियों में करीना कपूर, प्रियंका चोपड़ा और दीपिका पादुकोण भी अपने ग्लैमर के प्रदर्शन में मर्लिन मुनरो से प्रेरित दिखाई पड़ी हैं। *

ड्रेसिंग स्टाइल-फोटो शूट पर भी दिखा असर

बॉलीवुड में मर्लिन मुनरो का सबसे ज्यादा और गहरा प्रभाव किसी चीज पर पड़ा है, तो वह है कॉस्ट्यूम डिजाइन। यह अकारण नहीं है कि बॉलीवुड की हीरोइनों के बीच सफेद और आइवरी कलर के गाउन सबसे ज्यादा आकर्षण बिखेरते रहे हैं, जो कि मर्लिन मुनरो के सबसे ज्यादा पसंदीदा थे। मर्लिन मुनरो की तरह ही बॉलीवुड की अभिनेत्रियों ने हॉफ शोल्डर और हॉल्टर नेक ड्रेस को अपनी पहचान से बार-बार जोड़ा है। उन्हीं की तरह प्लेटिनम या हल्के सुनहरे बालों का प्रयोग, लाल लिपस्टिक, क्लासिक मेकअप तथा कैमरे की ओर हल्की मुस्कान के साथ पोज देने की शैली, ये सब कुछ बॉलीवुड की अभिनेत्रियों ने मर्लिन मुनरो से ही सीखा। ड्रेसिंग स्टाइल के अलावा फिल्म पत्रिकाओं में अनेक अभिनेत्रियों ने वैसे ही फोटो शूट कराए जैसे एक जमाने में मर्लिन मुनरो कराती थीं। घुमावदार रोशनी, क्लोज अप मुस्कान और क्लासिक हेयर स्टाइल, ये सभी प्रभाव बॉलीवुड में मर्लिन मुनरो से ही आए हैं। आज भी कई सेलिब्रिटी फोटो शूट पोज में ओल्ड हॉलीवुड थीम अपनाते हैं, जिसमें मर्लिन मुनरो की शैली सबसे खास होती है।

बराक नदी केवल जलधारा नहीं, बल्कि ब्रह्मपुत्र के बाद उत्तर-पूर्व भारत की अर्थव्यवस्था, कृषि, संस्कृति और पारिस्थितिकी की दूसरी महत्वपूर्ण जीवन रेखा है। इस नदी की विशेषताओं के बारे में जानिए।

पूर्वोत्तर भारत की दूसरी जीवन रेखा बराक नदी

विशिष्ट नदी

वीना गौतम

नदियां जीवनदायिनी होती हैं। नदी किनारे ही दुनिया की सभी सभ्यताएं व संस्कृतियां फली-फूली हैं। पूर्वोत्तर भारत की नदियों की बात करें, तो ब्रह्मपुत्र के बाद बराक नदी, दूसरी महत्वपूर्ण नदी है। बराक नदी के बारे में कहा जाता है कि यह केवल एक जलधारा नहीं है बल्कि एक जीवंत सभ्यता, संस्कृति और पारिस्थितिकी का आधार है।

उद्गम और अपवाह तंत्रः बराक नदी मणिपुर से निकलती है और असम की बराक घाटी से होकर बहती है। बराक घाटी से आगे बढ़कर यह बांग्लादेश में प्रवेश कर जाती है और वहां यह मेघना नदी घाटी तंत्र का हिस्सा बन जाती है। मणिपुर में जहां बराक नदी का जन्म होता है, वहां यह छोटी-छोटी धाराओं के रूप में आगे बढ़ती है और फिर आगे चलकर एक विशाल नदी का रूप ले लेती है। इसकी कुल लंबाई 900 किलोमीटर है और इसका प्रवाह क्षेत्र मणिपुर, मिजोरम और असम है। बांग्लादेश में घुसने के बाद यह दो धाराओं में बंट जाती है। एक सूरमा और दूसरा कुशियारा। जब यह मेघना नदी घाटी तंत्र का हिस्सा बनकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है, उस समय यह भारत और बांग्लादेश के बीच एक महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय जलधारा का रूप ले लेती है।

पारिस्थितिकीय महत्वः बराक नदी का बेसिन जैव-विविधता का समृद्ध केंद्र है। घने वनों, वेटलैंड और मैदानों से भरपूर इलाकों से गुजरती बराक नदी, दर्जनों किस्म की मछलियों, सैकड़ों किस्म के बहुरंगी पक्षियों और मीठे अन्न की उपजाऊ फसलों का समृद्ध ठिकाना है। इस नदी में नियमित बाढ़ आती है। लेकिन यह बाढ़ यहां जितना प्रत्यक्ष नुकसान करती है, उससे कई गुना ज्यादा अपने साथ उर्वरक मिट्टी लाकर खेती का जरिया भी बनती है।

पूर्वोत्तर की कृषि-अर्थव्यवस्था में योगदानः पूर्वोत्तर के कृषि जीवन में इस नदी का योगदान ब्रह्मपुत्र नदी से भी ज्यादा है। असम के लाखों लोगों के जीवन जीने का यह मुख्य आधार है। धान, जूट और सब्जियों की खेती, इस नदी के उर्वरक मिट्टी की देन है। बाढ़ के कारण यह हर साल जो उपजाऊ मिट्टी लेकर आती है, वह एक तरह से उत्तर पूर्व का खाद्यान्न भंडार भरती है। असल में यह नदी जल परिवहन का भी महत्वपूर्ण हिस्सा है। बराक नदी केवल जल का नहीं बल्कि कृषि, रोजगार और आर्थिक स्थिरता का भी स्रोत है।

ऐ ति हा सि क - स मा जि क - सांस्कृतिक महत्वः बराक नदी के किनारे बसे गांवों में त्योहारों पर अकसर मेलों का आयोजन होता है, जो जल और प्रकृति दोनों के प्रति आस्था और श्रद्धा का आधार हैं। बराक नदी के किनारे बंगाली और दूसरे समुदायों का निवास है, जिनकी सांस्कृतिक पहचान में इस नदी का महत्वपूर्ण योगदान है। इतिहास में बराक नदी ने उत्तर-पूर्व को अन्य क्षेत्रों से जोड़ने का महत्वपूर्ण काम किया था। प्राचीन और मध्यकाल में यह व्यापारिक मार्ग रही है। सिलचर जैसा सांस्कृतिक शहर इसी नदी के किनारे विकसित हुआ है।

संरक्षण है जरूरीः उत्तर-पूर्व की यह दूसरी सबसे महत्वपूर्ण नदी कई तरह की समस्याओं, जैसे- प्रदूषण, अवैध रेत खनन, जलवायु परिवर्तन आदि का सामना कर रही है। यदि इसका संरक्षण न हुआ तो पूर्वोत्तर भारत की यह दूसरी जीवनरेखा संकट में पड़ सकती है। *